डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 159 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | गुरुवार 21 मार्च 2024 | मूल्य 2 रुपया

डीजे वाहन और कार की टक्कर

नागदा जंक्शन के पार्षद पुत्र मौत, दो घायल

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। जिला मुख्यालय से कुछ किलोमीटर दूर संजीत रोड भूखी फंटे पर डीजे वाहन और कार के बीच टक्कर हो गई। इस दुर्घटना में नागदा जंक्शन के पार्षद पुत्र की मौत हो गई। जबकि, आदिवासी संगठन जयस के नेता संजय खराड़ी और एक अन्य व्यक्ति घायल हो गए, जिनका उपचार बड़े अस्पताल में किया जा रहा है। यह दुर्घटना मंगलवार रात करीब 11 बजे की है। जयस के नेता संजय खराड़ी उनके दो साथियों के साथ अपने गांव जा रहे थे। इसी दौरान यह हादसा हुआ।

थाना वायडी नगर पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार बीती रात संजीत रोड भूखी फंटे के पास कार एमपी 14 सीडी 1998 और डीजे वाहन की भिडंत हो गई। हादसा इतना भीषण था कि कार के परखच्चे उड़ गए। इस हादसे में आदिवासी जयस संगठन के नेता संजय खराडी निवासी मन्दसौर, नागदा जंक्शन निवासी दीपक पिता प्रमोद भील व इनका भाई शुवांशु पिता प्रमोद भील गम्भीर घायल हो गए। हादसे की सूचना पर मौके पर पहुंची वायडी नगर पुलिस ने कार से किसी तरह घायलों को निकालकर बड़े अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने कांग्रेस पार्षद प्रमोद के बड़े पुत्र को मृत घोषित कर दिया। वहीं दोनों घायलों का उपचार किया जा रहा है। मृतक के पिता ने बताया कि कार सवार तीनो व्यक्ति राजस्थान से सामाजिक कार्यक्रम में शामिल होकर वापस मंदसौर के भूखी गांव लौट रहे थे। इसी दौरान गांव के फंटे पर यह हादसा हो गया। मामले में वायडी नगर थाना पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया है।

योजनाओं पर ब्रेक...

शिव के जाते ही पोर्टल को हुआ कोरोना!

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। विधानसभा चुनाव के पहले पूर्व मुख्यमंत्री शिवराजसिहं चौहान ने योजनाओं की पोटली सामने रख दी थी। अब उनके जाते ही मानो योजनाओं के पोर्टल को कोराना हो गया हो। विधानसभा चुनाव के पहले जिन्हें योजनाओं का लाभ मिलना शुरू हुआ, उन्हें ही अब तक योजनाओं का लाभ मिल रहा है। नए आवेदनों के लिए अब पोर्टल नहीं खुल रहा है। विधानसभा चुनाव के परिणाम के बाद से ही नए लोगों को इनका लाभ नहीं दिया जा रहा है। चाहे वह लाड़ली बहना योजना हो या 450 रुपए में घरेलू गैस सिलेंडर देने की योजना या फिर सीखो कमाओ योजना हो। इससे महिलाओं और युवाओं को इन योजनाओं का इंतजार है, ताकि वे भी लाभ उठा सकें।

अब बहना नहीं बन रही लाड़ली...

विधानसभा चुनाव के पहले लाड़ली बहना योजना शुरू हुई। आवेदन करने के बाद 10 जून 2023 को बहनों के अकाउंट में एक हजार रुपए पहली किस्त आई। अब हर माह 1250 रुपए मिल रहे हैं। चुनाव के बाद से ही नए आवेदन के लिए पोर्टल बंद है। महिलाएं नए आवेदन नहीं कर पा रही हैं।

450 का गैस सिलेंडर का वादा अधूरा...

लाड़ली बहनों को 450 रुपए में गैस सिलेंडर देने की योजना भी चुनाव के पहले शुरू हुई थी। गैस सिलेंडर की डिलीवरी के वक्त तो पूरी राशि चुकाना है और बाद में सब्सिडी की राशि बहनों के अकाउंट में आना थी। कुछ महिलाओं को तो लाभ मिल रहा है। लेकिन, इसमें भी नए आवेदन नहीं लिए जा रहे। ऐसी लाड़ली बहनें जिनके नाम पर गैस कनेक्शन है। उनके भी आवेदन नहीं लिए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना भी बंद पड़ी...

यह योजना जून 2023 में शुरू हुई थी। इसमें 18 से 29 साल तक के युवाओं को उद्योग, दुकानों, कांट्रेक्टर के यहां ट्रेनिंग लेनी थी। वहीं काम सीखने के दौरान ही युवाओं को 8 से 10 हजार रुपए स्टाइपेंड मिल रहा है। जब यह योजना शुरू हुई तो औद्योगिक इकाइयों, ठेकेदारों के साथ ही बिजली कंपनी सहित अन्य विभागों ने अपने यहां युवाओं को रखा। इसके हाल भी अन्य योजनाओं की तरह हो गए हैं।

मुख्यमंत्री आवास भू-अधिकार योजना...

विधानसभा चुनाव के पहले मुख्यमंत्री आवास भू-अधिकार योजना शुरू की गई थी। गांवों में रहने वाले ऐसे परिवार जिनके पास खुद का घर नहीं और ना ही घर बनाने के लिए जमीन है। ऐसे परिवारों को घर बनाने के लिए सरकार से जमीन दी जानी है। लेकिन सारा पोर्टल पर आवेदन होना है। इस योजना के आवेदन भी नहीं लिए जा रहे हैं।

उज्जवला योजना का पोर्टल भी बंद...

विधानसभा चुनाव के पहले वार्डों में शिविर लगाकर लोगों को उज्जवला योजना में कनेक्शन दिए। लेकिन फ्री में घरेलू गैस कनेक्शन देने वाली उज्जवला योजना भी बंद हो गई है। एक सप्ताह से इसका पोर्टल भी नहीं चल रहा है। इससे इस योजना में भी आवेदन नहीं हो पा रहे हैं।

सोना-चांदी के जेवर ले उड़े चोर

पिपलियामंडी, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। पिपलिया चोपाटी के विद्युत ग्रीड के निकट घर में 3 लाख के सोने-चांदी के जेवर चोर ले उडे, चोरों ने राशन सामग्री भी नही छोडी। पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। गायत्री शक्तिपीठ निवासी महिपालसिंह भाटी ने पिपलिया थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि मेरे दो मकान है, बालाजी ग्रीड मंदिर के पास मकान में मेरी 82 वर्षीय मां प्रेमलता व बेटी प्रियंका रहती है। रात्रि में चोरों ने मां व बेटी के दोनों के घर के बाहर से दरवाजा बंद कर दिया। रात्रि में जब मेरी मां उठी तो घर का दरवाजा बाहर से बन्द था, पड़ोसी को आवाज देकर दरवाजा खुलवाया, देखा तो कीचन व घर का सामान अस्त-व्यस्त पड़ा था। मैं घर गया और देखा तो चोर दाल, तेल, पीतल व लोहे के छिन्नियां, एक कुकर, चूल्हा स्टेण्ड, 4 चांदी के बिस्कीट, चांदी की पायजेब, कुल तीन लाख की चोरी कर ले गए। भाटी की रिपोर्ट पर पुलिस ने केस दर्ज किया।

आदतन बदमाश को किया जिलाबदर

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री दिलीप कुमार यादव द्वारा म.प्र.राज्य लोक शांति एवं सुरक्षा की दृष्टिसे सुरक्षा अधिनियम के तहत एक आदतन बदमाश दिनेश पिता रामलाल नायक निवासी सूर्याखेडा थाना सीतामऊ जिला मंदसौर को जिलाबदर करने का आदेश जारी किया है। कलेक्टर श्री यादव ने आदेशित किया है, कि ये जिला बदर अवधि में मंदसौर जिले की राजस्व सीमा के साथ ही नीमच, रतलाम, उज्जैन, आगर मालवा एवं शाजापुर जिले की राजस्व सीमा में बगैर अनुमति के प्रवेश नहीं कर सकेगा।

एक रोज पहले ही दिन और रात रहे बराबर

इस बार 21 को नहीं 20 को हुई खगोलीय घटना

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। इस बार एक रोज पहले ही दिन और रात बराबर रहे। जबकि, यह खगोलीय घटना 21 मार्च को रहती है। खगोलप्रेमियों के लिए बुधवार 20 मार्च का दिन खास रहा। बुधवार को दिन और रात बराबर रहें सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच 12 घंटे 8 मिनट का अंतर रहा। आमतौर पर हर साल यह घटना 21 मार्च को होती है। लेकिन, इस बार फरवरी 29 दिन की थी, इसलिए इस बार एक दिन पहले यानि 20 मार्च को दिन और रात बराबर रहे।

खगोल वैज्ञानिकों के अनुसार पूरे साल में दो बार ऐसा होता है, जब दिन और रात बराबर होते हैं। इसमें 20 -21 मार्च के अलावा 23 सितंबर को भी दिन रात बराबर होते हैं। इसी प्रकार 22 दिसंबर को सबसे छोटा दिन और 21 जून को सबसे बड़ा दिन होता है। सूर्य के उत्तरी गोलार्ध पर विषुवत रेखा पर होने के कारण ही 23 सितंबर को दिन व रात बराबर होते है। बुधवार को सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच 12 घंटे 8 मिनट का अंतर रहा। जानकारों की माने तो इस घटना को इक्विनॉक्स कहते हैं। यह साल में दो बार होती है। पृथ्वी अपने अक्ष पर झुके होने के साथ ही सूर्य का चक्कर एक अंडाकार मार्ग में लगाती है। जिससे दिन और रात की लम्बाई घटती बढ़ती रहती है। इसके प्रभाव से ही मौसम में गर्मी, सर्दी होती है। इक्विनॉक्स के दौरान, सूर्य ठीक पूर्व में उगता है और ठीक पश्चिम में अस्त होता है, जिससे छाया अपेक्षाकृत कम बनती है। जैसे ही पृथ्वी की धुरी संतुलन के एक बिंदु पर पहुंचती है, जो उत्तरी गोलार्ध में वसंत और दक्षिणी गोलार्ध में शरद ऋतु की शुरुआत का प्रतीक है।

बहू से प्रताड़ित होकर ससुर ने लगाई फांसी..!

पिपलियामंडी, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। गांव भूखी में एक व्यक्ति ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक ने दिवार पर उसकी बहू से परेशान होकर आत्महत्या करना लिखा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार बीती रात्रि नाहरगढ थानान्तर्गत गांव भूखी निवासी गोपालगिर गोस्वामी ने स्वयं के बाडे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर सुबह पुलिस मौके पहुंची, शव को पीएम के बाद परिजनों को सुपुर्द किया। जानकार सूत्रों के अनुसार गोपालगिर पर पुत्रवधू 10 बीघा जमीन व रुपए लेने के लिए दबाव बनाया था। नही देने पर कुछ दिनों पूर्व प्रतापगढ थाने में गोपालगिर व परिवारवालों पर प्रकरण भी दर्ज करवाया था। इधर नाहरगढ टीआई आरसी दांगी ने के अनुसार मृतक ने घर की दिवार पर उसकी पुत्र वधू डिम्पल द्वारा प्रताडित करने पर आत्महत्या करने की बात लिखी है, पुलिस मामले की जांच कर रही है।

अव्यवस्था– शहर में होने वाले धार्मिक, राजनीतिक आयोजन व जुलूस, चल समारोह के दौरान यातायात पुलिस द्वारा शहर की यातायात व्यवस्था को लेकर कोई प्लानिंग नही की जाती है। इस कारण लंबे-लंबे जाम लग जाते है। इस दौरान एंबुलेंस भी जाम भी फंसी रहती है।

गेहूं के खेत में लगी आग, 50 क्विंटल गेहूं जला

नीमच, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। शहर के बघाना थाना क्षेत्र जयसिंहपुरा रोड पर बुधवार दोपहर एक गेहूं के खेत में अचानक आग लग गई। जिससे आसपास के इलाके में अफरा तफरी मच गई। सूचना पर फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया।

बताया जा रहा है कि खेत मालिक ने भेरूलाल पिता मांगीलाल मेघवाल निवासी जयसिंहपुरा को खेत बटाई पर दे रखा था। वहीं आग लगने के बाद आसपास के खेतों में मौजूद लोगों और ग्रामीणों ने भी टैंकर की मदद से आग पर काबू पाने का प्रयास किया। इस दौरान फायर ब्रिगेड की गाड़ी भी मौके पर पहुंची। लेकिन, तब तक करीब 50 से 60 क्विंटल गेहूं की फसल जल गई। जिससे किसान को आर्थिक नुकसान पहुंचा। किसान राधा किशन मेघवाल ने बताया कि उनके खेत के ऊपर से विद्युत तार गुजर रहे हैं। ढीले होने की वजह से इसमें शॉर्ट सर्किट होता रहता है। आज शॉर्ट सर्किट की एक चिंगारी उड़कर गेहूं के खेत में गिर गई। देखते ही देखते कुछ ही देर में आग ने विकराल रूप ले लिया। किसान ने बताया कि करीब 50 से 60 क्विंटल गेहूं की फसल जल गई है। जिससे करीब उसे 1 लाख रुपए के नुकसान होने का अंदेशा है। किसान का कहना है कि उसके द्वारा विद्युत विभाग को उक्त तारों को हटाने के लिए कई बार शिकायत की गई, मगर मामले में कोई सुनवाई नहीं हुई। इसी के चलते आज उसे इस तरह के भीषण अग्निकांड को झेलना पड़ा, जिससे उसे आर्थिक नुकसान हुआ है।

पांच दिनों से तापमान सामान्य

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। पश्चिमी विक्षोभ के चलते पिछले तीन चार दिनों से प्रदेश का मौसम बदला हुआ है। पूर्वी क्षेत्र में बारिश भी हुई। हालांकि जिले में मौसम साफ रहा तापमान में भी ज्यादा उत्तर चढ़ाव देखने को नहीं मिला। वर्तमान में जिले का अधिकतम तापमान 33 डिग्री और न्यूनतम तापमान 17 डिग्री के आसपास बना हुआ है। अगले कुछ दिनों में तापमान बढ़ने लगेगा।

माह के अंत तक तेज गर्मी का असर दिखाई देने लगेगा। मौसम जानकारों के अनुसार 20 और 23 मार्च की रात से दो पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो रहे हैं। प्रदेश में इसका असर दो तीन दिन बाद दिखाई देगा। मौसम विज्ञान केन्द्र भोपाल के अनुसार उत्तरी ओडिशा के ऊपर से छत्तीसगढ़ होते हुए विदर्भ तक ट्रफ लाइन गुजर रही है। इस कारण दक्षिण-पश्चिमी हवाएं अरब सागर से नमी ला रही है। दक्षिण-पूर्वी हवाएं बंगाल की खाड़ी से मध्यप्रदेश के पूर्वी हिस्से में भी नमी ला रही है। इस वजह से बारिश, ओले और तेज आंधी का दौर चल रहा है। पूर्वी मध्यप्रदेश में ओलावृष्टि और बारिश हो रही है। यह दौर बुधवार को भी जारी रहेगा। हालांकि, जिलों की संख्या कम रहेगी।

चुनाव लड़ने के तरीके में बदलाव

पहले कार्यकर्ताओं से जुटाते थे चुनावी खर्च

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। कुछ साल पहले और वर्तमान का चुनावी परिदृश्य पूरी तरह से बदल गया है। जहां पहले चुनाव लड़ने के लिए फंड आमजन से जुटाया जाता था, अब इसके विपरित हो गया है। अब पुलिस और प्रशासन को बाहर से आने वाले रुपयों पर नजर रखना पड़ रही है। करोड़ो रुपए और लाखो रुपए की शराब जब्त हो रही है। एक समय था, जब चुनाव में आपसी सदभाव था। आमजन से ही जनसम्पर्क के दौरान खर्च के लिए राशि ली जाती थी। जब बड़ी सभाओं में बड़े नेता आते तो कार्यकर्ताओं में बांट लेते थे कि खाने की व्यवस्था किस-किस के घर में रहेगी। पार्टी में दरी उठाने से लेकर अन्य बाते अभी जुमला लगती है। लेकिन, तब यही हकीकत थी। कार्यकर्ताओं के मेहनत से ही चुनाव लड़ा जाता था। बुजुर्ग नेताओ की माने तो जनसंघ के समय मतलब 1972 में चुनावी खर्च 12-13 हजार रुपए के करीब होता था। उम्मीद्वारों के पास उस समय पैसा नहीं होता था। बड़े नेता आते थे तो कार्यकर्ता के घर पर रुकते थे। सामूहिक रूप से कार्यकर्ता अपने-अपने घरों से खाना लाते और फिर सब नेताओं के साथ बैठकर खाते थे। लोग भी चुनाव में अपने स्तर पर छोटी-मोटी मदद करते थे।

किराए पर लेते थे बैंड की गाड़ी...

उस समय चुनाव प्रचार के लिए आज जैसे साधन नहीं थे। इसलिए प्रचार के लिए कार्यकर्ताओं की मदद से बैंडबाजे की गाड़ी को 10 रुपए रोज में किराए पर ली जाती थी। इसमें लगे माइक से ही प्रचार करने जाते थे। चौराहों पर सभा करते थे। कई बार गाड़ी को उन्हें भी धकेलना पड़ता था।

हर घर जाते थे कार्यकर्ता...

पार्टी का कार्यकर्ता हर घर पर चुनाव को लेकर दस्तक देता था। लोग भी उनका उसी आत्मीयता से स्वागत करते थे। कहीं कोई द्वेष भावना नहीं थी। आज की तरह गुटबंदी या सांप्रदायिक जैसे शब्द ही नहीं थे। हर कार्यकर्ता अपनी पार्टी के लिए पूरे मन से काम करता और प्रत्याशी को जिताने का प्रयास करता था।

खौफजदा कांग्रेस नेताओं के भरोसे मुगालता-ए-जोश पाले हुए हैं राहुल गांधी

मंदसौर/उज्जैन, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। एनडीए की भाजपा के हिटलरी नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कार्यप्रणाली से देश भर के राजनेताओं में इतना खौफ है कि उनके अपने दल के नेता उनके सामने मुंह नहीं खोल पाते हैं, तो विपक्ष इतना कि कांग्रेस के दिग्गज नेता भी लोकसभा प्रत्याशी बनने तक को तैयार नहीं हो रहे हैं। इसलिए समीक्षाएं उजागर हो रही है कि चाहे देश पर कर्ज का बोझ हो, निर्यात घट गया हो, चीन ने भारत की जमीन कब्जाई हो, महंगाई आसमान चढ़ गई हो, इलेक्ट्रोराल बांड के चंदे से धंधे का और सरकारें गिराने का खेला किया गया हो आएगा तो मोदी ही। हमारी नजरों के सामने भी जो राजनीतिक दृश्य नजर आ रहा है वह भी यही दर्शाता है कि केंद्र में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनने जा रही है। विपक्षी दल खासकर कांग्रेस तो रास्ता रोकना तो दूर अवरोध खड़े करने तक को तैयार नहीं है।

कैसे कर पाएगी जिसका प्रदेश का नेता दस साला मुख्यमंत्री भीरू प्रवृत्ति का सुविधा भोगी दिग्विजय सिंह जैसा हो! जिसे लोकसभा चुनाव पूरी तरह हारने के बाद भी राज्यसभा सांसद बनने से कोई गुरेज नहीं पर राज्यसभा सांसद रहते लोकसभा प्रत्याशी बनने से गुरेज तो क्या इनकार कर चुके हैं यह कहकर कि अभी राज्यसभा के 2 साल बाकी है। जबकि पिछले लोकसभा चुनाव के समय भी राज्यसभा सांसद थे। अभी इस पद के मजे ले रहे हैं, रिपीट नहीं हुए तो दूसरा पद पा ही लेंगे। क्योंकि, सार्वजनिक मंच से कहते आए हैं कि जिस मंच पर सोनिया, राहुल उपस्थित रहते हैं। उनके सामने में भाषण नहीं देता हूं।

चन्द्रमोहन भगत

वाक्या उज्जैन निगम परिसर मे हुई सभा का है। जब छत्रप नेता रहते दिग्विजय सिंह मना कर रहे हैं तो इनके राजनीतिक सहभागी कमलनाथ भी इनका अनुसरण कर चुके हैं। इनके नजरिए को जानने के बाद उनके अपने निजी समर्थकों ने भी जैसे पीसी शर्मा, सज्जन वर्मा, विपिन जैन, जीतू पटवारी, अरुण यादव जैसे कई नेता लोकसभा चुनाव लड़ने से इंकार कर चूके है। प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने सार्वजनिक इनकार नहीं किया है। पर, डरे सहमे हुए हैं कि कहीं कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी इन्हें डायरेक्ट घोषणा कर लोकसभा प्रत्याशी न बना दे! क्योंकि, यह खुद ही बताया करते हैं कि वे राहुल गांधी के करीबी नेताओं में से हैं। इन खौफजदा नेताओं के इनकार और डर ने पूरी प्रदेश कांग्रेस में डर का ऐसा वातावरण फैला दिया है कि कांग्रेस कहीं से भी किसी को भी प्रत्याशी बनाएगी वह निश्चित ही हार जाएगा!

इस तरह की खौफजदा कांग्रेस के राष्ट्रीय युवराज राहुल गांधी अपनी भारत जोडो न्याय यात्रा की भीड देखकर मुगालता ए जोश पाले हुए हैं कि मध्य प्रदेश में उनके, सोनिया के संरक्षण में पनपे दिग्विजय सिंह, कमलनाथ, जीतू पटवारी प्रदेश की 29 में से आधी सीटें कांग्रेस को जीतवा देंगे? बता दें ये वही दिग्विजय सिंह है जो दस साल मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश, गोवा जिस राज्य के भी संगठन प्रभारी रहे वहीं से कांग्रेस नेस्तनाबूत हो गई है। गोवा तो ऐसा उदाहरण है, जहां उनके ही प्रभार के समय कांग्रेस विधायक बहुमत में थे। पर सरकार भाजपा समर्थित बनी थी। इतने उच्च दर्जे के कांग्रेस संगठक पर इतनी अनुपलब्धियों के बाद भी कांग्रेस के जोशीले युवराज पूरा भरोसा कर रहे हैं तो कुछ ना कुछ तो बात होगी ही! जैसे कि अब बिहार, उत्तर प्रदेश, गोवा में कांग्रेस अभी भी निष्प्रभावी संगठन की तरह काम कर रही है। मध्य प्रदेश में भी छत्रप नेता लोकसभा चुनाव में हारने के डर से अपने दड़बे में घुस गए हैं, तब जीते हुए विधायकों को आगे किया जा रहा है।

इनमें सिलवानी के देवेंद्र पटेल, दमोह के रामसिया भारती, जौरा के पंकज उपाध्याय, जबलपुर के लाखन धनगोरिया, शहडोल से फूंदेलाल मार्को और मंदसौर के विपिन जैन शामिल है। मध्य प्रदेश के इन छत्रप नेताओं के डर ने ही कांग्रेस में इतना डर फैला दिया है कि विपक्षियों के मुद्दे भी आम जनमत लगभग नजर अंदाज कर चुका है। कांग्रेस के इन्हीं छत्रप नेताओं के कारण युवराज भले ही देश भर में भीड़ एकत्रित कर अपनी निजी लोकप्रियता बड़ा रहे हो, पर अच्छे नतीजे पाने के लिए ज्यादा जरूरत है दस साल से सन्निपात से ग्रसित कांग्रेस के आधे मूर्छित कार्यकर्ताओं में भी जोश भरने के प्रयास कर ले! वरना कांग्रेस के और अधिक बदतर हालात करने के लिए दिग्विजय सिंह, कमलनाथ, जीतू पटवारी जैसे छत्रप नेता है ही!

विचार-मंथन

स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव बड़ी चुनौती

आम चुनाव की तारीखों की घोषणा हो गई है। सात चरण में मतदान होंगे। पहले चरण के मतदान से लेकर नतीजों की घोषणा तक डेढ़ महीने चुनाव का माहौल बना रहेगा। पहले चरण के मतदान से पहले भी पूरा एक महीना राजनीतिक दलों को मिला है। यानी चुनाव कुल ढाई महीने की अवधि में फैला है। यों राजनीतिक दल इसके लिए काफी पहले से तैयारियों में जुट गए थे। उम्मीदवारों के नामों की घोषणा, सहयोगी दलों के साथ सीटों के बंटवारे आदि को लेकर मंथन काफी समय से चल रहा था। अब वे अपना-अपना समीकरण लेकर मैदान में उतरेंगे। मगर चुनाव का ज्यादा दारोमदार आखिरकार मतदाता पर होता है। वह चुनाव को क्या दिशा देता है, इस पर दुनिया की नजर टिकी होती है। मगर कुछ चुनावों के अनुभवों से जाहिर है कि मतदाता चुनाव को लोकतंत्र के उत्सव के रूप में मनाने के बजाय दलगत उन्माद से भर जाते हैं। इसी का नतीजा कई जगहों पर राजनीतिक हिंसा में दिखाई देता है। कुछ राज्यों में हिंसा की घटनाएं चिंता पैदा करती हैं। इसी के मद्देनजर भारतीय निर्वाचन आयोग को अपनी रणनीति तैयार करनी पड़ती है। चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप में संपन्न कराए जा सकें, यह निर्वाचन आयोग के सामने बड़ी चुनौती होता है। चुनाव के वक्त राजनीतिक दल एक-दूसरे पर स्वाभाविक रूप से आरोप-प्रत्यारोप लगाते हैं। उसमें कई बार आपत्तिजनक बयान भी आ जाते हैं। उस पर नजर रखना निर्वाचन आयोग की जिम्मेदारी है। मगर पिछले कुछ चुनावों से देखा जा रहा है कि पार्टियों के समर्थक खुद राजनेताओं के बयानों के बचाव या विरोध में परस्पर गुत्थम-गुत्था हो जाते हैं। पश्चिम बंगाल और दक्षिण के कुछ राज्यों में ऐसा वातावरण कुछ अधिक देखने को मिलता है। लोकतंत्र में असहमति अच्छी बात है, मगर उसे लेकर हिंसा पर उतर जाना किसी भी रूप में लोकतांत्रिक नहीं कहा जा सकता। इससे नाहक निर्वाचन आयोग और सुरक्षाबलों की परेशानियां बढ़ती हैं। बहुत सारे मतदाताओं के मनोबल पर भी इसका असर पड़ता है और वे मतदान केंद्रों तक पहुंचने से हिचकते हैं। एक लोकतांत्रिक देश का जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हर मतदाता से उम्मीद की जाती है कि न केवल वह अपने विवेक से मतदान करे, बल्कि मतदान की प्रक्रिया को भी बाधित होने से बचाए। मतदान के बदले राजनीतिक दलों की तरफ से दिए जाने वाले पैसे और उपहार वगैरह के प्रलोभन से पार पाना भी बड़ी चुनौती बन गया है, इस मामले में भी मतदाताओं की मदद की अपेक्षा है। हालांकि इतने लंबे समय तक चुनाव को फैला देने पर कुछ राजनीतिक विशेषज्ञों के एतराज को सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता। चुनाव की अवधि जितनी लंबी खिंचती है, उतनी ही उसमें गड़बड़ियों की आशंका भी बनी रहती है। इसे लेकर कई बार आपत्ति दर्ज कराई जा चुकी है। पहले चरण के मतदान के बाद करीब डेढ़ महीने तक वोटिंग मशीनों की निगरानी करनी पड़ेगी। इतने लंबे समय तक आदर्श आचार संहिता लागू रहने से सरकारी कामकाज भी प्रभावित होंगे। सुरक्षाबलों को लगातार एक से दूसरे इलाके में स्थानांतरित करते रहना पड़ेगा। इसलिए मांग की जाती रही है कि चुनाव को कम से कम समय में संपन्न कराया जाना चाहिए। हालांकि सुरक्षा कारण बड़ी चिंता का विषय हैं, पर इतनी लंबी अवधि में फैले चुनाव में स्वतंत्रता और निष्पक्षता सुनिश्चित करना खुद निर्वाचन आयोग के लिए भी कम कठिन काम नहीं होता है।

इस्लामिक देशों के एजेंडे पर चल रहा संयुक्त राष्ट्र?

संजय तिवारी

असल में संयुक्त राष्ट्र में इस्लामोफोबिया को लेकर जो प्रस्ताव आया है वह प्रस्ताव ही भेदभावपूर्ण है। इसमें एक धर्म के खिलाफ लोगों की बढ़ती नफरत पर चिंता तो व्यक्त की गयी है लेकिन अन्य धर्मों के खिलाफ जो नफरत है उसकी अनदेखी कर दी गयी है। यूएन द्वारा जारी प्रेस रिपोर्ट में ईसाई और यहूदी का एक लाइन में जिक्र तो है लेकिन दुनिया के तीसरे बड़े धर्म हिन्दू का जिक्र «अन्य» के रूप में किया गया है। जबकि जिस पाकिस्तान ने यह प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र में प्रस्तुत किया है, उस पाकिस्तान में हिन्दुओं, ईसाइयों को नरकीय जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ता है। नागरिक अधिकारों का ऐसा भीषण भेदभाव है कि कोई गैर मुस्लिम पाकिस्तान के शीर्ष पदों पर संवैधानिक रूप से बैठ ही नहीं सकता। लेकिन इस प्रस्ताव के यूएन में पास होने से ऐसा लगता है कि संयुक्त राष्ट्र नहीं बल्कि उसका बुनियादी चरित्र बदलकर ओआईसी वाला हो गया है। संयुक्त राष्ट्र में पिछले साल से इस्लामोफोबिया के खिलाफ माहौल बनना शुरु हुआ और इस साल प्रस्ताव पास करके दुनियाभर के देशों को इसे रोकने के लिए कानून बनाने के लिए कह दिया गया। अब इसके लिए पर्याप्त धन और प्रभाव का इस्तेमाल भविष्य में किया जाएगा ताकि दुनिया के सभी गैर मुस्लिम देशों में ऐसे कानून बन जाएं ताकि वहां इस्लाम की सच्चाई बताने, या फिर इस्लामिक हिंसा के बारे में जानकारी देने को अपराध माना जाए। इस्लामिक देशों में ऐसा पहले से ही है। दुनिया के जितने भी इस्लामिक देश हैं वहां इस्लाम की निंदा, आलोचना या उसके प्रतीकों पर सवाल उठाने को अपराध समझा जाता है। पाकिस्तान जैसे इस्लामिक देश में तो इसके लिए आजीवन कारावास और मौत की सजा तक का प्रावधान है। मतलब इस्लामिक देशों में रहते हुए आप किसी भी प्रकार से इस्लामिक सिद्धांतों, प्रतीकों पर सवाल नहीं उठा सकते। एक मनुष्य की सभी प्रकार की अभिव्यक्ति की आजादी तब खत्म हो जाती है जब वह इस्लाम पर सवाल उठाना चाहता है। ओआईसी और अन्य इस्लामिक देश अब यही व्यवस्था संयुक्त राष्ट्र के जरिए संसार के सभी गैर इस्लामिक देशों में बनाना चाहते हैं। असल में संयुक्त राष्ट्र में ओआईसी का प्रभाव इस सदी की शुरुआत में उस समय बढ़ना शुरु हुआ जब दुनियाभर में इस्लामिक आतंकवाद पैर पसार चुका था। इसी दौर में ओआईसी ने संयुक्त राष्ट्र के साथ मिलकर संसार में उभरते विरोधाभासों से निपटने में मदद की पेशकश की। इस्लामिक देशों के संगठन ओआईसी की इस पेशकश का संयुक्त राष्ट्र ने स्वागत किया। लेकिन अब लगभग 23-24 साल बाद वह सहयोग इस्लामोफोबिया के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव और प्रयास के रूप में सामने आया है। इस बीच संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2006 में आतंकवाद के खिलाफ जिस प्रस्ताव को पेश किया गया था वह भी मेलजोल से विवादों को सुलझाने और सभी धर्मों का सम्मान करने जैसे उपदेशों से भरा हुआ था। लेकिन उस समय जिस काउण्टर टेररिज्म इंपलीमेन्टेशन टास्क फोर्स का गठन किया गया था वह खत्म हो चुका है। स्वाभाविक है इस्लामिक देशों के संगठन के साथ तालमेल करके संयुक्त राष्ट्र ने जो पहल शुरु की थी, आखिरकार ओआईसी ने संयुक्त राष्ट्र को ही इस्लामिक देशों के संगठन के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस्लामिक देशों खासकर अरब देशों के पास पैसा है और संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएं हमेशा अपने दानदाताओं के प्रभाव में रहती हैं। अगर संयुक्त राष्ट्र इस्लामोफोबिया से निपटने के लिए संसाधन खर्च करने की बात कर रहा है तो इसके पीछे अमीर अरब देशों का ही पैसा होगा। पाकिस्तान जैसे देश तो सिर्फ मुखौटा हैं जो आगे बढ़कर अपने आपको सच्चा इस्लामिक मुल्क साबित करना चाहते हैं। यह अरब देशों का ही पैसा और प्रभाव है कि संयुक्त राष्ट्र सभी प्रकार के मानवाधिकारों को किनारे करके इस्लामिक प्रतीकों की रक्षा करने में जुट गया है। संयुक्त राष्ट्र के इस %इस्लामीकरण% में यूएन सेक्रेटरी जनरल एन्टोनियो गुन्टेरेस, उनकी डिप्टी अमीना मोहम्मद या फिर संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार के अध्यक्ष वोल्कर तुर्क की तिकड़ी की भी अहम भूमिका है। वोल्कर तीन दशक से संयुक्त राष्ट्र से जुड़े हैं और उनके कैरियर की शुरुआत ही कुवैत की फंडिंग से हुई थी। उनके वक्तव्य, बयान और प्रयास संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख के बजाय इस्लामिक अधिकारों के लिए लड़नेवाले किसी मौलाना की तरह होते हैं। यूरोप में जब से इस्लाम की सच्चाई बताने या कुरान जलाने की घटनाएं हुई हैं तब से इस तिकड़ी के इस्लामिक प्रतीकों की इज्जत करने तथा इस्लाम के प्रति सहिष्णुता बढ़ाने वाले बयान आते रहते हैं। उन प्रयासों का यह चरम था कि सभी प्रकार के नागरिकों के मानवाधिकार किनारे करते हुए किसी इस्लामिक संगठन की तरह संयुक्त राष्ट्र ने इस्लामोफोबिया के खिलाफ न सिर्फ प्रस्ताव पारित कर दिया बल्कि हर साल 15 मार्च को इसके खिलाफ एकजुट होने का आह्वान भी कर दिया। यह बिल्कुल वही तरीका है कि क्राईम करके अपने आप को विक्टिम घोषित कर दो। इससे लोग आपके क्राइम के बजाय आपके विक्टिम होने पर चर्चा शुरु कर देंगे। संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं के लिए यह महत्वपूर्ण नहीं है कि वो इस्लामिक देशों के संगठन की तरह व्यवहार करे। इस्लामिक सिद्धांत मेलजोल वाली सभ्यताओं में विश्वास नहीं करते इसलिए उन्होंने अपना अलग वैश्विक संगठन ओआईसी बना रखा है। लेकिन संयुक्त राष्ट्र भी अगर ओआईसी की भाषा बोलेगा तो दुनिया के उन देशों के लिए संकट पैदा होगा जो संयुक्त राष्ट्र को सर्वधर्म समभावी संगठन मानकर उससे जुड़े हुए हैं। इस्लामोफोबिया उन लोगों द्वारा गढ़ा गया एक सिद्धांत है जो नहीं चाहते कि इस्लामिक सच्चाइयां सबके सामने आयें। वरना अगर इनकी नीयत ठीक होती तो संसार के अलग अलग बौद्धिक और सामाजिक मंचों का इस्तेमाल करके वो यह साबित कर देते संसार के लोग इस्लाम के बारे में जैसा सोचते हैं, इस्लाम वैसा नहीं है। यह करने के बजाय इस्लामिक देशों का समूह और अब संयुक्त राष्ट्र भी गैर इस्लामिक देशों को भी उन इस्लामिक देशों की तरह बनाना चाहते हैं।

गारंटी के खेल में कौन होगा आगे?

अकु श्रीवास्तव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी गारंटी को युवाओं के विकास, महिलाओं के सशक्तिकरण, दशकों से वंचित समाज के तबकों की प्रगति से जोड़ते हैं। किसान सम्मान निधि से शुरू हुई यह गारंटी अब बड़ा रूप ले चुकी है । भारतीय जनता पार्टी ने महिलाओं के वोट को सशक्त करने की पूरी कोशिश की है और साथ ही लाभार्थी का एक बड़ा वोट बैंक बनाया है। अस्मिता, राष्ट्रवाद, आर्थिक विकास और राम मंदिर समेत ऐसे कई मुद्दे हैं जो भाजपा की सभाओं में जमकर गूंजेंगे। दूसरी ओर कांग्रेस अभी तक गारंटी की 25 घोषणाएं कर चुकी है। इनमें से 10 तो वे हैं जिन्हें आजमा कर हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और तेलंगाना में जीत दर्ज की गई। इनके साथ ही 5 नई न्याय गारंटी और जोड़ी गई हैं। ये युवाओं, महिलाओं और किसानों के लिए हैं। इसके अलावा 10 अन्य गारंटियों की घोषणा शनिवार को की गई। हालांकि इनमें से अधिकतर के बारे में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अपनी मणिपुर से मुम्बई तक की गई 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के दौरान ही बता दिया था। नारी न्याय के अंतर्गत मल्लिकार्जुन खरगे 5 बड़ी गारंटियों की घोषणा पहले ही कर चुके हैं। कांग्रेस और उसके सहयोगी बेरोजगारी और महंगाई के मुद्दे को भी अपने प्रचार अभियान में जोर-शोर से उठा रहे हैं। वे सी.ए.ए. को खत्म करने और अनुच्छेद 370 की बात भी उठा रहे हैं। वे चुनावी बांड का सत्ता के लिए दुरुपयोग और किसानों के मुद्दे को प्रमुखता दे रहे हैं तथा एम.एस.पी. की गारंटी की बात कर रहे हैं। आई.एन.डी.आई.ए . नई-नई गारंटी के साथ सामने आ रहा है और दूसरी तरफ एन.डी.ए. इन पर सवाल उठा रहा है कि जहां उनकी घोषणा पहले राज्यों में की गई थी, वहां इन्हें लागू क्यों नहीं किया गया? साथ ही भाजपा इन गारंटियों को लेकर कटाक्ष भी करती रही है कि इसका पैसा कहां से आएगा? किसानों का एम.एस.पी. को लेकर ऐसा ही तर्क रहा है। दूसरी तरफ अपनी गारंटियों को लेकर भारतीय जनता पार्टी के नेता यह कहते हैं कि हमने 5 साल से ज्यादा पहले किसान सम्मान निधि की घोषणा की और उसे पूरी तरह से लागू भी कर दिया। जनता ने भी उस पर पूरी तरह विश्वास किया जबकि पिछले चुनाव में कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष राहुल गांधी की 72000 रुपए की (12 गुना ज्यादा) किसान सम्मान निधि वाले वायदे को नकार दिया। जनता ने डिलीवरी पर ज्यादा भरोसा किया, वादों पर नहीं। वायदों और गारंटियों के इस खेल के बावजूद कई सवाल उठ रहे हैं। एन.डी.ए . के लिए यह सवाल दक्षिण में पर्याप्त विजय पाने को लेकर है। प्रधानमंत्री मोदी का भी फोकस वहीं है। जबकि आई. एन. डी. आई. के लिए यह सवाल हिंदी पट्टी को लेकर है जहां पिछले 10 सालों से उसकी जमीन बंजर बनी हुई है। उस पर वोटों की खेती होने की संभावना पर सवाल उठते रहे हैं। वैसे भी उसकी काफी जमीन पर क्षेत्रीय दलों ने कब्जा कर लिया है और वह उसे वापस करने को राजी नहीं है। आई. एन. डी. आई. ए. में सीटों का बंटवारा बड़े हद तक न हो पाने की वजह कांग्रेस की कोशिश अपनी जमीन को वापस लेने की है । क्षेत्रीय दल कांग्रेस को कोई रिबेट देना ही नहीं चाहते। 2019 में कांग्रेस को उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और मध्य प्रदेश में सिर्फ एक-एक सीट मिली। इन तीनों राज्यों में कुल 149 सीटें हैं। इसके अलावा वह राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में तो खाता भी नहीं खोल सकी। उसने छत्तीसगढ़ में 2 सीटें जीती थीं। इस तरह 10 राज्यों की कुल 225 सीटों में इकहदी पट्टी में कांग्रेस ने सिर्फ 6 सीटें जीतीं। राम मंदिर के उफान के पहले ही भाजपा ने 2014 में यू.पी. में 71 सीटों पर जीत और 2019 में 62 सीटों पर जीत दर्ज की थी। वर्ष 2019 में सपा, बसपा और आर.एल.डी. ने मिलकर चुनाव लड़ा था। इस बार बसपा अकेले चुनाव लड़ रही है। आर.एल.डी. भाजपा के साथ है। इस बार यू.पी. में राम मंदिर मुद्दे के अलावा काशी विश्वनाथ मंदिर और ज्ञानवापी मस्जिद का मामला भी उसके पक्ष में है। योगी की कानून व्यवस्था ने तमाम मुद्दों को पीछे कर दिया है और मोदी के साथ योगी-योगी के नारे भी लग रहे हैं। पिछली बार भाजपा ने 40 में से 39 लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज की थी।

भोजपुरी लोकरंग का बंगाल से सदियों पुराना रिश्ता

सदियों से प्रवासन का दर्द झेल रही भोजपुरी माटी और उसका लोकरंग इन दिनों राजनीतिक निशाने पर है। इसकी वजह बने हैं भोजपुरी गायक पवन सिंह। भोजपुरीभाषी वोटरों की बहुसंख्या वाली आसनसोल लोकसभा सीट (पश्चिम बंगाल) पर भाजपा ने पवन सिंह की लोकप्रियता का राजनीतिक फायदा उठाने की सोची। उन्हें टिकट भी दे दिया, लेकिन कायदे से पवन सिंह अभी तैयार भी नहीं हो पाए थे कि तृणमूल कांग्रेस ने उन पर हमला बोल दिया। हमले का बहाना बने उनके कुछ गीत, जिनमें बंगाली महिलाओं के लिए ऐसे शब्द इस्तेमाल हुए हैं, जिन्हें मौजूदा लोकवृत्त में शालीन नहीं कहा जा सकता। हो सकता है कि इस मुद्दे को बंगाल बनाम बिहार या पूर्वी उत्तर प्रदेश से होते हुए बांग्ला बनाम हिंदी समाज के रूप में उछाला जाए। मगर ऐसा करने से पहले बंगाल और भोजपुरी इलाकों से जुड़े कुछ ऐतिहासिक तथ्यों पर जरूर गौर करना चाहिए। भोजपुरी ही नहीं, अवध के इलाके में भी प्रवासन के दर्द को समेटे एक गीत के बोल आज भी सोहनी-कोड़नी (घास सफाई का काम) के दौरान सरेह-खेत में सुनाई दे जाते हैं- रेलिया न बैरी, जहजिया न बैरी, पइसवा बैरी भइले न... रेलिया बैरन पिया के लिये जाय रे... रेलिया बैरन... (न रेल दुश्मन है, न जहाज, पैसा दुश्मन हो गया है, जिसके लिए पिया को दुश्मन रेल लिए जा रही है)। भोजपुरी और कमोबेश अवधी इलाके सदियों से गरीबी की मार झेलते रहे हैं। मुख्यतः खेती-किसानी पर निर्भर इस इलाके के लोगों के लिए रोजगार का जरिया पिछली सदी के आखिरी दशक के पहले तक पूरब, यानी बंगाल ही रहा है। जाहिर है, रोटी के लिए सदियों से जारी इस प्रवासन का दर्द विशेषकर भोजपुरी गीतों में है। चूंकि, पहले आज की तुलना में संचार और आवागमन के तेज व सहज साधन नहीं थे, इसलिए नौकरी करने गया व्यक्ति बरसों तक नहीं लौटता था। प्रवासन में कई बार उसका स्थानीय महिलाओं से नैन-मटक्का हो जाता था। इसकी गूंज जब प्रवासी के गांव पहुंचती थी, तो प्रवासी की पत्नी का दिल स्वाभाविक टूट जाता था। तब प्रवासी की पत्नी आज की महिला की तरह पढ़ी-लिखी नहीं होती थी, तो वह अपने पति के दूर जाने के लिए आर्थिक मजबूरी और जिंदगी के संघर्ष के बजाय बंगालन प्रेमिकाओं को ही जिम्मेदार मानने लगती थी। भोजपुरी लोकगीतों में बंगाली महिलाएं ज्यादातर ऐसी जादूगरनी के रूप में आती हैं, जो प्रवासियों की मति मार लेती हैं। भोजपुरी के शेक्सपियर कहे गए भिखारी ठाकुर भी अपनी अमर रचना विदेशिया में नायिका से कहलवाते हैं, पिया मोर मति जा पुरुबवा हो राम/ पुरुब देस में टोना बेसी बा, पानी बा कमजोर, यानी प्रिय पूरब यानी बंगाल मत जाओ, वहां जादू ज्यादा है और वहां का पानी भी खराब है। भोजपुरी लोक में बंगाली महिलाओं को लक्षित ऐसे कई गीत मिल जाएंगे। यह मानने में कोई गुरेज नहीं होना चाहिए कि शक्ति पूजक बांग्ला समाज में भोजपुरी इलाकों की तुलना में महिलाओं का सम्मान ज्यादा है। वहां विभिन्न कलाओं, मसलन गायन, नृत्य आदि को लेकर महिलाओं पर कोई बंदिश नहीं है, जबकि भोजपुरी समाज इन बंदिशों से युक्त रहा है। मगर भोजपुरिया समाज शादी-विवाह और मुंडन-जनेऊ में भरपूर मनोरंजन का आदी है। कभी लौंडा नाच इस इलाके की प्रसिद्ध और प्रचलित लोक कला रही, लेकिन अब इसका रंग फीका पड़ गया है, और महिला नर्तकियों का चलन बढ़ गया है। इन नर्तकियों में स्थानीय नहीं, बल्कि बंगाली महिलाएं और लड़कियां ही ज्यादा होती हैं।

आज का राशिफल

मेष : [illegible]

वृषभ : [illegible]

मिथुन : [illegible]

कर्क : [illegible]

सिंह : [illegible]

कन्या : [illegible]

तुला : [illegible]

वृश्चिक : [illegible]

धनु : [illegible]

मकर : [illegible]

कुंभ : [illegible]

मीन : [illegible]

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5181

		2		6	1			9
8		5	4				7	6
6		4						
		3		5	2			
			8		7			
			9	3		2		
						1		2
3	6				8	4		7
2			1	4		9		

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5180

7	3	2	5	6	1	8	4	9
8	1	5	4	2	9	3	7	6
6	9	4	7	8	3	5	2	1
1	8	3	6	5	2	7	9	4
4	2	9	8	1	7	6	3	5
5	7	6	9	3	4	2	1	8
9	4	8	3	7	5	1	6	2
3	6	1	2	9	8	4	5	7
2	5	7	1	4	6	9	8	3

वर्ग पहेली 5181

1	2		■	3	4		5
6		■	7			■	
	■	8	■	■	■	9	■
10	11		12	13	14		
15		■	16			■	■
17		18	■	■	■	19	
■	20		■	21			■
■	■	22			■	23	

संकेत: बाएं से दाएं
1. 2000 को ऑस्ट्रेलिया में यहां 27 वें ओलंपिक खेलों का शुभारंभ हुआ (3)
3. इस देश को साउथवेस्ट अफ्रिका कहा जाता था (4)
6. समय का अत्यंत छोटा भाग (2)
7. राष्ट्र, देश, मुल्क (3)
10. पुरानी फिल्मों के प्रसिद्ध गीतकार जिनका मूल नाम अब्दुल हयी था (8)
15. तिब्बती धर्मगुरु यह कहलाते है (2)
16. मधुर, स्वर्ण (3)
17. प्रकार, जेवर, आभूषण (3)
19. मशगूल, काम में लगा हुआ (2)
20. देश, शरीर, काया, बदन (2)
21. गुणमाला, आफताब, सूरज, भैम (3)
22. यह नार्डिक देशों में सबसे बड़ा देश जिसकी राजधानी स्टाकहोम है (3)
23. पूर्ति सामान, वह जो लिया जाए (2)

संकेत: ऊपर से नीचे
1. सेनाध्यक्ष, सेनानी, कमांडर, सेनापति (6)
2. कश्मीर की प्रसिद्ध झील (2)
3. हजरत मुहम्मद की धर्मोपदेश स्तुति (2)
4. माह्ली, मत्स्य, बारह राशियों में से एक (2)
5. एक पहर, तीन घंटे का समय (2)
8. मयूर, हमारा राष्ट्रीय पक्षी (2)
9. इस देश की राजधानी मैड्रिड है (2)
11. अविवेक, मूढ़ता, नासमझी, विवेकहीनता (4)
12. देखना (अंग्रेजी), इनामत (2)
13. शास्त्रीय संगीत में तबले आदि का बोल (2)
14. हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में पाया जाने वाला एक जंगली बैल (2)
18. विद्वान व्यक्ति, ज्ञानी (3)
19. प्रक्षालनकर्मी, प्रक्षालक, मैले वस्त्र साफ करने वाला (3)
21. हुनर, कला, आर्ट, गुण (2)

वर्ग पहेली 5180 का हल

स	म	ओ	ठ	म	ला	गी	■
म	न	■	ह	म	ला	य	र
ख	न	की	र	■	अ	■	ह
स	■	■	ना	क	म	रा	व
■	आ	■	■	म	र	म	र
पक	म	■	म	दी	ना	■	■
शु	म	त	ह	■	व	म	ना
न	न	■	ल	क्ष	■	ला	स

निजी चिकित्सालय भ्रामक विज्ञापन से ग्राहकों को न करे भ्रमित-चौहान

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत के जिला संपर्क प्रमुख वीरेंद्र चौहान ने बयान जारी कर निजी चिकित्सालय द्वारा जो वर्तमान में विज्ञापन का खेल खेलकर आम ग्राहकों को गुमराह किया जा रहा हे इसको लेकर इन निजी चिकित्सालय को भ्रामक प्रचार न करने की चेतावनी दी है।

ग्राहक पंचायत के वीरेंद्र चौहान ने अपने बयान में बताया हे की वर्तमान में मंदसौर शहर में कुकुरमुत्ते की तर्ज पर अनगिनत निजी चिकित्सालय खुलते जा रहे हे। इन चिकित्सालयों का उद्देश्य अब ग्राहकों की सेवा करना नही रह गया है बस माल केसे कमाया जाए इसमें ये तिकड़म लगाते रहते हे। यह निजी चिकित्सालय अपने आप को स्थापित करने के लिए आजकल बड़े बड़े लुभावने विज्ञापन देकर ग्राहकों को गुमराह करने में लगे हुए हे। कई बार तो ये भी देखा गया हे की ये निजी चिकित्सालय खुद ही अपने चिकित्सालय को सर्वश्रेष्ठ का तमगा भी दे देते हे। सेवा के नाम पर अब सेवा करना तो दूर ग्राहकों से मोटी रकम ऐठने में लगे रहते हे। पहले शुरू में अपना हॉस्पिटल जमाने के लिए यह हॉस्पिटल मुफ्त में शिविर आयोजित करते हे फिर बाद में जब यह ठीक से स्थापित हो जाते हे तो ये मुफ्त में शिविर बंद कर देते हे। बाद में जब ग्राहक अपना इलाज करवाने इन्ही निजी चिकित्सालय में जाता हे तो इलाज के नाम पर ग्राहकों को भारी भरकम बिल थमा दिया जाता हे। यदि वाकई में ये निजी चिकित्सालय ग्राहकों की सेवा करना चाहते है तो क्यों बाद में भी इन ग्राहकों को इलाज में कोई सुविधा या छूट क्यों नहीं देते,ये प्रश्नचिन्ह हे। इन निजी चिकित्सालय पर शासन प्रशासन का भी कोई नियंत्रण नहीं हे। यह मनमाफीक शुल्क जनता से वसूलते हे और जनता भी बेबस होकर उनका बिल चुकता करती रहती है। ऐसे निजी चिकित्सालय के भ्रामक विज्ञापन पर ग्राहकों को जागरूक रहना चाहिए और इनके झांसे में नहीं आना चाहिए।

बड़ी मात्रा में शराब जप्त, 3 गिरफ्तार

पिपलियामंडी, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। पुलिस ने बडी मात्रा में अवैध शराब के साथ आरोपी को पकडा। पिपलियामंडी पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर लूनाहेडा फन्टे पर 6 पेटी (300 क्वार्टर) देशी शराब कार्टून में लेकर खडे मिण्डलाखेडा निवासी भेरुलाल पिता तोरीराम बावरी को पकडा। इसी तरह नाहरगढ पुलिस ने 5.160 लीटर शराब सहित औरंगाबाद निवासी प्रवीणकुमारसिंह को, मल्हारगढ पुलिस ने 10 लीटर हाथ भट्ठी कच्ची शराब के साथ सेमली मेवाड (नीमच) निवासी सत्यनारायण पिता कन्हैयालाल भांभी को, झारडा चोकी पुलिस ने 21 क्वार्टर शराब के साथ गोपालपुरा निवासी करणसिंह पिता सरदारसिंह गोड बंजारा को पकडा।

लोकभाषाओं और साहित्य का जन-मन से जुड़ाव रहा है-चौबे

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मालवी और हिन्दी कवि साहित्यकार, आकाशवाणी और दूरदर्शन के वरिष्ठ कलाकार पंडित श्याम चौबे ने कहा अंचल की लोकभाषाओं और स्थानीय साहित्य सृजन का जन जन के साथ मन से जुडाव रहा है, ये संस्कृति को जोडने का कार्य करती रही है हर स्तर पर इसका पोषण होना चाहिए आप बुधवार दोपहर नागदा गली में सांस्कृतिक और साहित्यिक संस्था जनपरिषद मंदसौर चैप्टर द्वारा किये गए सम्मान के उत्तर में बोल रहे थे। राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक एवं दशपुर प्राच्य शोध संस्थान निदेशक श्री कैलाशचंद्र पांडेय, नगर पालिका पार्षद एवं सेवा बैंक संस्था प्रमुख श्री सुनील बंसल इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे। मालवी के साथ हिंदी कविताओं की प्रस्तुतियां बहुत पसंद की जाती रही है और हमेशा नई रचनाओं के साथ आकाशवाणी केंद्रों पर आमंत्रित किया जाता है। श्री चौबे के अनुसार दूरदर्शन पर भी कई रचनाओं की प्रस्तुतियां की हैं। कवि सम्मेलनों में राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त

कार्यक्रम में संवाद करते हुए 90 वर्षीय श्री श्याम चौबे ने स्मृतियों को ताजा करते हुए बताया कि आकाशवाणी के केंद्रों पर कोई पांच दशकों से रचना पाठ, परिचर्चा, आलेख वाचन, गीत प्रस्तुति कर मंदसौर जिले का प्रतिनिधित्व कर ग्रामिक पंडित मदनकुमार चौबे, चंद्रोदय सिंह राज पंडित मदनलाल जोशी कैलाश पाठक अनवर आदि के साथ अंचल में जिलेमें और देश - प्रदेश के विभिन्न स्थानों के बडे मंचों पर कविता पाठ किया है।

यादों को कुरेदने पर श्री श्याम चौबे ने बताया कि नुक्कड नाटक, रंगमंच और कवियों बालकवि बैरागी, सुल्तान मामा, गिरिवर सिंह भंवर, पुखराज पांडे, श्रीकृष्ण सरल, माया गोविंद, संतोष आनंद, मायाराम सुरजन, केशव प्रकाश विद्यार्थी, हेमेंद्र त्यागी शोभागमलजैन करुण पयाम वासिफ़ रूपलाल चौहान हारमोनियम ढोलक के साथ समूह बनाकर गांव गांव जनजागरण करते हुए सामाजिक कुरीतियों को मिटाने और पर्यावरण बचाने के अभियान चलाए हैं। इस अवसर पर पुरातत्व वेत्ता एवं शोध संस्थान निदेशक श्री पांडेय ने वयोवृद्ध कवि साहित्यकार श्री श्याम चौबे की विभिन्न विधाओं में दशकों से जारी सेवाओं की सराहना की और कहा कि श्री चौबे मालवी लोक भाषा के श्रेष्ठ रचनाकार हैं आपके गीत और कविताएं दूरदर्शन ओर आकाशवाणी पर सुनी जाती हैं। पार्षद श्री सुनील बंसल ने श्री चौबे के गीत और रचनाओं को याद किया। आपने श्री चौबे के शतायु जीवन की कामना की। इस अवसर पर जनपरिषद मंदसौर चैप्टर संयोजक वरिष्ठ पत्रकार डॉ घनश्याम बटवाल, पुराविद श्री पांडेय, पार्षद श्री बंसल एवं अन्य ने वरिष्ठ कवि साहित्यकार श्री श्याम चौबे का शॉल श्रीफ़ल के साथ माल्यार्पण कर सम्मानित किया। ललित कुमार, प्रद्युम्न चौबे बेंगलुरु एवं अन्य उपस्थित थे। अशक्तता के बावजूद वयोवृद्ध कवि साहित्यकार श्री श्याम चौबे ने अपनी कविता और गीत सुनाए।

सीईओ ने किया मूल्यांकन केंद्र का निरीक्षण

नीमच, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। जिला पंचायत सीईओ श्री गुरुप्रसाद डिप्टी कलेक्टर सुश्री, किरण अंजना डिप्टी कलेक्टर सुश्री मयूरी जनपद सीईओ श्री आकाश धार्वे ने विकासखंड स्तरीय मूल्यांकन केंद्र शासकीय कन्या उ मा वि जावद का अवलोकन कर मूल्यांकन कार्य की प्रगति के बारे में वस्तु स्तिथि की जानकारी ली। मूल्यांकन केंद्र प्रभारी यशवंत माली द्वारा बताया गया कि मूल्यांकन केंद्र पर कक्षा पांचवी की लगभग 16594 तथा कक्षा आठवीं की 24034 कॉपियां प्राप्त हुई थी। जिसमें से लगभग 44% मूल्यांकन कार्य पूर्ण हो चुका है। मूल्यांकन केंद्र पर कक्षा पांचवी आठवीं परीक्षा प्रभारी कमलेश बाड़ीका, बीएसी श्रवण सिंह चंदेल एवं घनश्याम मेघवाल भी उपस्थित थे। जिस पर सभी ने मूल्यांकन केंद्र की व्यवस्थाओं को सराहा एवं आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए।

सेन सामुहिक विवाह सम्मेलन की तैयारियां जोरो पर

भाटखेड़ी/मनासा, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। जिला सेन समाज सगंठन नीमच के तत्वावधान मै जावद तहसील सेन समाज सगंठन के सानिध्य मै इस वर्ष 2024 का सामुहिक विवाह सम्मेलन आडकी माता मंदिर परिसर डिकेन मै आयोजित होने जा रहा है। उक्त जानकारी देते हुए जिलाधयक्ष दीपक गेहलोद मनासा, जिलायुवाध्यक्ष सोनु सेन कनावटी, सामुहिक विवाह सम्मेलन समिति अध्यक्ष कैलाश राठौर नीमच, सामुहिक विवाह सम्मेलन संयोजक ओमप्रकाश राठौर डिकेन, तहसील अध्यक्ष राकेश सेन डिकेन, युवा-अधयक्ष नवीन चोहान जावद ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी जिला सेन समाज सगंठन नीमच द्वारा आयोजित सामुहिक विवाह सम्मेलन 20 अप्रैल शनिवार को आडकी माता मंदिर परिसर डिकेन मै भव्यता के साथ आयोजित होगा। सामुहिक विवाह सम्मेलन को लेकर तैयारिया जोरो पर चल रही है। सामुहिक विवाह सम्मेलन को लेकर वरिष्ठजन हर जगह समाज के कार्यक्रम मै अपनी उपस्थित दर्ज कराते हुए प्रचार प्रसार कर रहै, साथ ही विवाह योग्य व्यस्क जोडे हेतु प्रयासरत है। अभी सामुहिक विवाह सम्मेलन समिति के पास 10 जोडो का पंजीयन हो चुका है आगे भी अधिक से अधिक संख्या मै पर्जीयन हो इस हेतु समाजबंधुओ से सम्पर्क कर रहै है। सामुहिक विवाह सम्मेलन मै विवाह हेतु पंजीयन के लिए भेरूलाल गेहलोद कुम्हारा गली नीमच पर या अपने-अपने तहसील अध्यक्ष, युवा-अध्यक्ष से सम्पर्क कर पंजीयन करावे उक्त जानकारी जिला युवा उपाध्यक्ष राजेश सेन पालसोडा, मनासा जिला युवा प्रवक्ता उमेश सेन भाटखेडी ने दी।

शपथ दिलाकर मतदान हेतु जागरूक किया

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर के प्राचार्य डॉ. एल. एन.शर्मा ने बताया कि महाविद्यालय में मतदान जागरूकता हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, इलेक्टोरल लिटरेसी क्लब एवं प्राणिकी विभाग के तत्वाधान में स्वीप गतिविधि के अंतर्गत मतदान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 19 मार्च 2024 को किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को शपथ दिलाकर मतदान करने हेतु जागरूक किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्राणिकी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. संदीप सोनगरा ने विद्यार्थियों को मतदान के महत्व के बारे बताया एवं मतदान उत्सव के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। एन.एस.एस. कार्यक्रम अधिकारी प्रो. अनिल कुमार आर्य ने विद्यार्थियों को शपथ दिलाई कि किस प्रकार हम अपने देश के लोकतांत्रिक परंपराओं की मर्यादा को बनाए रखें व निर्भीक होकर धर्म,वर्ग ,जाति,समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग कर मतदान करें। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को वीडियो के माध्यम से भी मतदान हेतु जागरूक किया गया। कार्यक्रम के दौरान डॉ शिखा ओझा,प्रो. रितु शर्मा, प्रो. कुंदन माली, प्रो. प्रकाश दास, प्रो, चीना मिंडा, प्रो. हिमांशी राय गौड, डॉ. मनीषा कोठारी उपस्थित रहे।

कलाल बसेर महिला मण्डल ने मनाया फाग महोत्सव

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी मंदसौर कलाल बसेर समाज महिला मंडल ने द्वारकाधीश मंदिर में पूजा अर्चना, गीत भजन के साथ गुलाल और फूलों से हर्षो उल्लास पूर्वक फाग उत्सव मनाया।

इस अवसर पर फूलों की होली फाग खेलने द्वारकाधीश मंदिर में आये नटवर नंदलाल सहित उपस्थित महिलाओं ने अनेक फाग गीत प्रस्तुत किये व उन पर नृत्य भी किया। इस अवसर पर शर्मिला बसेर ने कहा कि त्यौहार जीवन में आई निरसता को दूर करते हैं, और जब रंगो भरा त्यौहार आता है तो जीवन में खुशियों के रंग भर देता हैं, तथा सभी जोश के साथ आने वाले कल के संघर्ष के लिए तैयार हो जाते है। इस अवसर पर समाज की महिलाएं सरोज बसेर, मुन्नी दीदी, कल्पना बसेर, पार्वती बसेर, पूजा बसेर, विजया बसेर, मधु बसेर, माना चौधरी, शिखा चौधरी, गरिमा बसेर, कृष्ण बसेरा, ममता बसेर सहित बड़ी संख्या में कलाल बसेर समाज की महिलाएं उपस्थित थी।

कायस्थ समाज की महिलाओं ने मनाया फाग उत्सव

नीमच, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। कायस्थ समाज की महिला मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भवनामृत संघ (इस्कॉन) गुप्ता हॉस्पिटल के पास के परिसर में फाग महोत्सव धूमधाम से मनाया गया जिसमें महिलाओं ने एक दूसरे को फाग महोत्सव के उपलक्ष्य में एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली पर्व की बधाई शुभकामनाएं दी, इस अवसर पर महिला मंडल द्वारा अनेक कृष्ण गोपियों की लीलाओं के साथ भजन नृत्य गीत की प्रस्तुति दी गई कायस्थ समाज के महिला मंडल की महिलाओं ने बढ चढकर उत्साह के साथआयोजन में भाग लिया जिसमें प्रमुख रूप से उर्मिला गौड, प्रीति गौड, कृष्णा निगम, वर्षा श्रीवास्तव, स्वाति श्रीवास्तव, उर्मिला गौड, शैलजा गौड, आशा गौड, ज्योति गौड, प्रतिभा श्रीवास्तव, प्रीति श्रीवास्तव, सीमा गौड, प्रीति सक्सेना, अलका श्रीवास्तव, सीमा गौड, दीपिका सक्सेना, कृति सक्सेना आदि इस्कान से जुडी हुई भक्त मंडल की अनेक महिलाएं उपस्थित रही।

होली मिलन समारोह 24 को

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। आर्य समाज मन्दसौर के अध्यक्ष श्री मधुसूदन आर्य ने बताया कि दिनांक 24 मार्च 2024, रविवार को प्रात: 9 बजे से होली का पर्व मनाया जायेगा। जिसमें पंचकुण्डीय यज्ञ होगा एवं यज्ञ पश्चात् भजन व होली मिलन समारोह मनाया जायेगा। अध्यक्ष श्री आर्य ने सभी से निवेदन किया है कि 24 मार्च 2024, रविवार को प्रात: 9 बजे उपस्थित होकर कार्यक्रम में सहभागी बने।

अवैध शराब व लहान जप्त

नीमच, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा निर्वाचन 2024 की आदर्श आचार संहिता लागू होने पर नीमच कलेक्टर श्री दिनेश जैन व जिला आबकारी अधिकारी श्री आरएन व्यास के मार्गदर्शन तथा सहायक जिला आबकारी अधिकारी श्री बीएल सिंगाडा के नेतृत्व में अवैध मदिरा के निर्माण, विक्रय एवं संग्रहण के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत सघन तलाशी की जा रही है। इसी क्रम में बुधवार को वृत्त मनासा में संयुक्त जिला आबकारी दल द्वारा ग्राम भांड्या, बरखेडा, और मोया मे नदी–नालों के किनारे दबिश के दौरान लगभग 6500 किलो ग्राम महुआ लहान एवं 90 लीटर हाथ भट्टी कच्ची महुआ मदिरा तथा 9 चालू हाथ भट्टियां पकड़ी गई। उक्त कार्रवाई में आबकारी उपनिरीक्षक वृत्त मनासा श्री संजय कुमार कवारे ने म.प्र. आबकारी अधिनियम की धारा 34(1)(क) एवं(च) के तहत कुल 4 प्रकरण दर्ज किये है। उक्त प्रकरणों में जब्त अवैध मदिरा एवं महुआ–गुड लहान का अनुमानित मूल्य लगभग 6 लाख 72 हजार 500 रुपये है। इस कार्यवाही के दौरान आबकारी आरक्षक सर्वश्री विष्णु यादव, विजय सोलंकी, बलवंत भाटी, महेश गेहलोद, दीपक पाटीदार, हंसराज बिलवाल, सुश्री निशा कुंवर मौजुद थी।

कलेक्टर ने किया गेहूं उपार्जन केंद्र का निरीक्षण

नीमच, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री दिनेश जैन ने बुधवार को मनासा क्षेत्र के पिपलिया रावजी में सोसायटी में स्थापित गेहूं उपार्जन केंद्र का निरीक्षण कर उपार्जन के लिए की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया। कलेक्टर श्री जैन ने उपस्थित किसानों से चर्चा कर, उन्हीं समर्थन मूल्य पर गेहूं विक्रय के लिए लाने हेतु प्रेरित किया। कलेक्टर ने कहा कि सरकार व्दारा 2400 रूपये प्रति क्विंटल की दर पर किसानों से गेहूं खरीदा जा रहा है। कलेक्टर ने उपार्जन कार्य में लगे कर्मचारियों से कहा कि वे पंजीकृत सभी किसानों से संपर्क कर उनके स्लॉट बुकिंग करवाकर, गेहूं विक्रय के लिए लाने के लिए प्रेरित करें और उपार्जन कार्य को एक सप्ताह में पूर्ण करवाये।

कलेक्टर श्री जैन ने पिपलिया रावजी उपार्जन केंद्र पर किसानों के लिए की गई छाया, पेयजल व्यवस्था, तोल के लिए इलेक्ट्रानिक तोल कांटे की व्यवस्था, गेहूं छानने के लिए छानने की व्यवस्था, नमी मापक यंत्र की व्यवस्था, बारदान की व्यवस्था, भण्डारण की व्यवस्था, उपार्जित गेंहू के परिवहन की व्यवस्था, भुगतान व्यवस्था का अवलोकन कर जायजा लिया। उन्होने गेहूं उपार्जन केंद्रों एवं शासन व्दारा निर्धारित मूल्य से संबंधित फ्लेक्स, बैनर लगाने के निर्देश भी दिए। कलेक्टर ने उपार्जन केंद्र पर उपलब्ध शिकायत एवं सुझाव पंजी, बारदानों और बारदानों पर लगाये जाने वाले टेग्स का अवलोकन भी किया। इस मौके सहायक आयुक्त सहकारिता श्री राजू डाबर, जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक के क्षेत्रिय अधिकारी श्री आर.पी.नागदा एवं अन्य अधिकारी-कर्मचारी तथा किसान भाई उपस्थित थे।

गेहूं उपार्जन के लिए स्लापट बुकिंग करें- शासन द्वारा रबी विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर खरीदी करने के लिए जिले में 37 खरीदी केंद्र स्थापित किये गये हैं, जिस पर पंजीकृत किसानों द्वारा औसत अच्छी गुणवत्ता(एफएक्यू) की गेहूं निर्धारित समर्थन मूल्य 2400 रूपये, क्विंटल की दर से 15 मार्च 2024 से 7 मई 2024 तक उपार्जन किया जाएगा। किसान भाई को सूचित किया हैं, कि रबी विपणन वर्ष 2024-25 उपार्जन प्रक्रिया में बदलाव किया गया हैं। विगत वर्षों में किसान को उपार्जन हेतु एसएमएस भेजे जाकर, उनकी उपज क्रय की जाती थी, किन्तु इस वर्ष किसान अपनी सुविधानुसार तिथि व उपार्जन केन्द्र पर गेहूं का विक्रय कर सकता हैं। किसान स्वयं अपनी उपज विक्रय करने के लिए ई-उपार्जन पोर्टल के माध्यम से या नजदीकी पंजीयन केन्द्र पर पहुंचकर, फसल विक्रय करने के लिए उर्पाजन केन्द्र, तिथि एवं टाइम का स्लॉट का चयन करना होगा। त्रुटि रहित भुगतान हेतु खरीदी केन्द्र पर खसरा/पावती, पंजीयन रसीद, पासबुक, की छायाप्रति की साथ लेकर उपस्थित होवें। जिला आपूर्ति अधिकारी नीमच ने किसानों बन्धुओं से अपील की हैं कि समस्याओं से बचने के लिए पंसदीदा केन्द्र पर स्लॉटबुक कर अपनी कृषि उपज को समर्थन मूल्य पर पंजीकृत खरीदी केन्द्रों पर गेहूं विक्रय करने हेतु ई-उपार्जन पोर्टल पर स्लॉट का चयन कर गेहूं का विक्रय निर्धारित समयावधि में करें। समस्या या जानकारी के लिए समस्त खरीदी केन्द्र के प्रबंधक, म.प्र. स्टेट सिविल सप्लाईज कार्पो.विभाग मो.न. 9424034522 तथा कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी मो.नं. 9098735090 पर संपर्क किया जा सकता हैं।

कुमठ मप्र प्रभारी नियुक्त

पिपलियामंडी, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। राष्ट्रीय हिन्दू वाहिनी संगठन अयोध्या के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशचन्द्र द्विवेदी ने आरोग्य भारती जिलाध्यक्ष अशोक कुमठ को संगठन के मध्यप्रदेश प्रभारी पद पर मनोनीत किया। राष्ट्रीय प्रवक्ता भक्त वस्तल्य शर्मा (जयपुर) ने यह जानकारी दी।

कुत्तों का व्यवहार

देश में कुत्तों के बदल रहे व्यवहार
कहीं कहीं मित्रवत
कहीं कहीं खूँखार।
पालिका पशु प्रेमी
में हो रही तकरार
नगर झूल रहा
बीच मँझधार।
अकेला कुत्ता मित्रवत
समूह में खूँखार
नगरवासी ही समझें
कुत्तों का व्यवहार।

नंदकिशोर राठौर, मंदसौर

कथा आयोजन को लेकर अधिकारियों ने किया निरीक्षण

मनासा, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। नगर में होने जा रही शिवमहापुराण कथा का स्थल निरिक्षण करने पहुंचे नीमच जिला कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक महोदय, एवं अधिकारियो की टीम। ज्ञात हो की कल शाम को 5 बजे के करीब आयी तेज हवाओ से, कथा स्थल पर बनाया डोम का स्ट्रक्चर पूरा गिर गया था। गनीमत रही की उस समय वहा पर कोई मौजूद नहीं था। वरना एक गंभीर हादस हो जाता। इसी बात को ध्यान में रखते हुवे, अधिकारियो द्वारा कथा आयोजक परिवार, व्यवस्थापकों एवं टेंट वालो को स्पष्ट कहा गया है की 3 दिन में सारी व्यवस्थाए समुचित कर लेवे, साथ ही मौसम का ध्यान रखते हुवे तैय्यारी करे। उसके बाद ही अनुमति पर विचार किया जाएगा।

सांसद गुप्ता से पार्षद प्रतिनिधि राठौर ने जेतपुरा फंटे पर फ्लाई ओवर निर्माण की बात की

मनासा, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस, सांसद और भाजपा प्रत्याशी सुधीर गुप्ता कार्यकर्ताओ की बैठक लेकर देश में भाजपा सरकार और नरेन्द्र मोदी को एक बार फिर पीएम बनाने का मंत्र देने आएं थे। सांसद ने कार्यकर्ताओ से वन टू वन चर्चा भी की। इस दौरान भाजपा नेता और पार्षद प्रतिनिधी दिनेश राठौर ने सांसद से मुलाकात करते हुए कहा कि नीमच मनासा रोड पर जेतपुरा फंटे पर आएं दिन सडक हादसे हो रहे है। कई लोगो की जान चली गई है। यह चौराहा डेंजर जोन बन चुका है। यहां पर फ्लाई ओवर का निर्माण होना चाहिए। लंबे समय से क्षेत्र की जनता फ्लाई ओवर की मांग करती आ रही है। आप दो बार सांसद का चुनाव जीते और तीसरी बार भी सांसद बने। लेकिन सांसद बनने के बाद प्राथमिकता के साथ में जेतपुरा फंटे पर फ्लाई ओवर का निर्माण करवाएं। इस पर सांसद सुधीर गुप्ता ने कहा कि संसदीय क्षेत्र के विकास के लिए कोई कमी नही रखी है। केन्द्र सरकार से स्वास्थ्य, सडक रेल और अफीम किसानो के लिए जब भी मांग की वो हमें मिला है। जेतपुरा फंटे की समस्यां मेरे संज्ञान में है और इसके निराकरण के लिए पुरे प्रयास करूगा। और लोकसभा चुनाव बाद पहले बजट में फ्लाई ओवर की सुविधा क्षेत्र की जनता को मिले और हर आदमी सुरक्षित रहे इसके प्रयास करेगे।

जान्हवी ने स्वर्ण पदक अर्जित किया

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस।

महाविद्यालय की प्राचार्य डा.उमा गगरानी ने बताया कि एम.ए अंग्रेजी विषय की छात्रा कु.जान्हवी जैन ने विक्रम विश्वविद्यालय की वर्ष 2023 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर प्रावीण्य सूची मं प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक अर्जित कर महाविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापकगण डा.निरंजन गंगवाल, एवं डा.अंजली जैन को छात्रा की इस सफलता पर महाविद्यालय परिवार द्वारा बधाई दी गई।

मतदान केन्द्रों का किया निरीक्षण

नारायणगढ़, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा निर्वाचन 2024 अन्तर्गत नगर नारायणगढ में दिनांक 20 मार्च 2024 को सेक्टर अधिकारी राकेश कुमार शर्मा, मुख्य नगर पालिका अधिकारी प्रमोद जैन, तथा पुलिस विभाग से सब इंस्पेक्टर भारत भाबर द्वारा मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मतदान केंद्र के बी.एल.ओ को 85+ मतदाताओं की सूची तैयार करने के निर्देश दिए गए है तथा मतदान की शपथ दिलवाई है गई।

व्यंग्य- चलो कापियां जांचें

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। कापियां जांचने का भी अपना अपना तरीका होता है, वो छात्रों के होम वर्क की हो या परीक्षा की। होम वर्क की कापियां साल भर जचंती रहती है, नहीं भी जंचती रहती। होम वर्क की कापियों को जांचने का कोई इतना टेंशन नी है, क्योंकि इन जंची हुई को कोई जांचता नहीं इसलिए हर पन्ने पर टिक लगाकर अंत में गुड/बेस्ट की टीप लगाकर साइन करना होते हैं। हेड मास्टर/प्रिंसिपल भी सभी कापियां इकट्ठा कर अंत पेज पर सील लगाकर साइन कर देता है। दूसरी होती है परीक्षा की कापियां, यहां राशि मिलती है इसलिए सावधानी रखनी पडती है। इस प्रकार की कापियों को जांचने को कहते हैं मूल्यांकन करना। इस मूल्यांकन का भी अपना एक सीजन आता है यूं तो मूल्यांकन के कई क्षेत्र होते हैं किन्तु विद्यार्थियों की परीक्षा के मूल्यांकन कर्ताओं की बात ओर है इनमें

भी अलग अलग विषयों के मूल्यांकन कर्ताओं के अपने-अपने अलग अलग मूड होते है ये मूड को लेकर ही कापियां जांचते हैं। कोई सडा सडा मुंह लेकर मूल्यांकन कक्ष में प्रवेश करता है मानो जबरन डंडे के बल पर बुलाया गया हो या घर पर पत्नी/पति से लडकर आया हो या पत्नी ने धक्के देकर भेजा हो तो कोई मज़े मज़े में आता और कापी जांचता। कोई सिद्धांत वादी है तो कोई लकीर का फकीर, तो कोई लचीले मन वाला। नए खिलाडी एक दिन में दस कापियां भी नहीं जांच पाते तो पुराने एक दिन में सौ जांच देते यदि संख्या का प्रतिबंध न होता तो। हालांकि नया खिलाडी भी प्रेक्टिस होने पर अपनी कापियों की संख्या बढा ही लेता है। कोई सरसरी निगाह से अंक उगलता तो कोई शब्द - अंक चबा चबा कर, कोई पासांक तक ले जाकर तो कोई कृपा अंक तक पहुंचाकर कृपावंत होता तो कभी लाल कलम से कापी में ,पर-उपर द्विअंडा प्रदाता बन जाता। जब कापी में कोई कुछ नहीं जना होता है तो अंडा जनना बेचारे की मजबूरी हो जाती है। कोई दिल फरियाद होता है तो कोई कंजूस तो कोई बिजली कटौती जैसे वाला तो कोई जी एस टी जैसे वाला। कुछ शिक्षण संस्थाओं को सेंधमारी - गुप्तचरी में अपनी दक्षता दिखानी ही पडती है इससे वे ये सूंघ ही लेती है कि उसकी मूल्यांकन की कापियां कहां हैं ताकि परिणाम आने पर समाचारपत्रों की हेड लाइन में सर्वोत्कृष्टता में उनका नाम प्रथम पायदान पर हो ताकि शासन उनकी पीठ ठोंक सके। मूल्यांकन कर्ता कहीं कहीं बेचारा भी होता है कहीं कहीं उसकी भावुकता को जगाया जाता है कहीं कहीं उसकी मानवीयता का दोहन, परीक्षार्थी काफी में कुछ भी लिखने को स्वतंत्र होता है जैसे कापी शुरू से अंत तक राम राम लिखकर भर देना। या मैं पास नहीं हुई तो मेरी शादी नहीं होगी, मेरी मां बीमार है सेवा में लगी थी, पढ नहीं पाया/पाई, पास कर देना, थोडा लिख पाया बहुत समझना नंबर अच्छे देना, सौगंध है आपको पास नहीं किया तो। मूल्यांकन भवन में किसी की कापी में दो सौ का कड़क निकल जाता है तो उछल पड़ता है चलो आज सबके नाश्ते का इंतजाम हुआ तो किसी का चुपचाप खिसे मैं खिसक जाता है। मूल्यांकन कीजिए, करवाइए आगे बढाइए या रोकिए अपने वालीज संस्था है देखिए - दिखवाइए मूल्यांकन कीजिए आनंद लीजिए।

भगवती प्रसाद गेहलोत, पिपलियामंडी

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	4	23220	2320
उडद	3	3600	7772
सोयाबीन	3363	3630	4621
गैहु	11000	2370	2700
चना	1500	4841	5555
मसुर	232	4800	5855
धनिया	450	5640	9900
लहसुन	28500	3000	12500
मैथी	2000	4340	6040
अलसी	1557	4820	5200
सरसो	1140	4560	4849
तारामीरा	3	4451	4451
इसबगोल	50	9000	15692
प्याज	485	501	1631
कलोंजी	22	12800	18306
डॉलर	3	3800	6600
तिल्ली	0000	0000	0000
मटरसुखी	4	4901	5794
असालीया	176	6420	7020

केंद्र ने चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति मामले में एससी में हलफनामा दिया, कहा...

याचिका का मकसद राजनीतिक विवाद खड़ा करना

नई दिल्ली, 20 मार्च। केंद्र सरकार ने चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति मामले पर शीर्ष अदालत में हलफनामा दाखिल किया है। चुनाव आयुक्तों के चयन में मुख्य न्यायाधीश को शामिल न करने के चलते नियुक्ति रद्द करने की मांग का केंद्र सरकार ने विरोध किया है। केंद्र सरकार ने कहा- यह दलील गलत है कि आयोग की स्वतंत्रता तभी होगी, जब सिलेक्शन पैनल में कोई जज जुड़े। इलेक्शन कमीशन एक स्वतंत्र संस्था है। इस याचिका का मकसद सिर्फ राजनीतिक विवाद को खड़ा करना है।

केंद्र ने कहा है कि चयन पैनल में न्यायपालिका के किसी सदस्य की मौजूदगी से ईसीआई की स्वतंत्रता उत्पन्न नहीं होती है। उच्च संवैधानिक पदाधिकारियों से निष्पक्षता से काम करने की अपेक्षा की जाती है। ऐसे में चुनाव आयुक्तों की क्षमता और पात्रता पर सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए। याचिकाकर्ता राजनीतिक विवाद पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट में दायर हलफनामे में केंद्र सरकार ने कहा कि दोनों चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति नियम-कानून के आधार पर की गई है, इससे पहले सर्च कमेटी ने बड़े पैमाने पर सभी तथ्यों पर गौर किया और फिर समिति को नाम आगे भेजा गया। ऐसे में एडीआर समेत इस मामले में दायर सभी अर्जियों को खारिज किया जाना चाहिए।

सांसद गुप्ता ने शहर के संगठनों से मुलाकात कर संवाद किया

मंदसौर/नीमच, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। सांसद सुधीर गुप्ता ने बुधवार को अपने लोकसभा चुनाव अभियान के दौरान मंदसौर शहर के विभिन्न संगठनों, व्यापारिक संगठनों और सामाजिक संगठनों से मुलाकात की। उन्होंने सुबह सब्जी विक्रेता संघ से मुलाकात का दौर शुरू किया। उसके पश्चात सनी मशीनरी पर मशीनरी व्यापारी संगठन से मुलाकात की बाद बस स्टैंड पर संकेश्वर बर्तन भंडार पर बस स्टैंड व्यापारी संगठन, आशीष गुप्ता के कार्यालय पर मंदसौर जिला पेट्रोल पंप संगठन, पेंशनर संघ के पदाधिकारी एवं गणमान्य सदस्यों, जिला बीज एवं कीटनाशक विक्रेता संघ के सदस्यों से मुलाकात की। बाद में मीरे कल पैरामेडिकल कॉलेज गए वहां उन्होंने सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को युवा उत्सव बताया और कहां कि मोदी जी देश के युवाओं के लिए और इस राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए दिन-रात कार्य कर रहे हैं। उसके पश्चात वे इंडस्ट्रीज एरिया में सोनगरा इंडस्ट्री पहुंचे वहां उन्होंने औद्योगिक संघ के सदस्यों से मुलाकात की। सांसद गुप्ता ने सभी संगठनों से मुलाकात कर कहां की आज देश चारो और विकास कर रहा है और उसमें व्यापारियों की भूमिका बहुत है। आज हम चीन को पछाड़ कर दूसरी औद्योगिक शक्ति बनने जा रहे है। दुनिया के बड़े देशों ने मोदी जी के नेतृत्व को स्वीकार किया है। आसपास के एशिया के कई देशों में आज भारत के बंदरगाह स्थापित हो रहे हैं जो हमारी सामजिक और आर्थिक प्रगति का मौजूदा सबसे ताकतवर उदाहरण है। आज विश्व के पटल पर भारत का व्यापार दोगुनी रफ्तार से बड़ा है। प्रति व्यक्ति आय में निरंतर वृद्धि हुई है। उन्होने कहा कि कोरोना जैसी महामारी में भी हम वैक्सीन के मामले में दुनिया में एक बड़ी मिसाल के रूप में उभरे हैं। आज हमारा देश जहां सिर्फ औद्योगिक प्रगति कर रहा है जबकि सैन्य उपकरण में भी हम निर्यात की भूमिका में खड़े हो गए हैं। आज कृषि के क्षेत्र में भारत के किसानों की उपज का मूल्य लगातार बड़ा है। किसान भाई प्रगति कर रहे हैं। रेलवे के क्षेत्र में आज हम 70 सालों की बात करें तो मोदी शासन के 10 वर्षों का कार्य आज जनता के सामने है। अमृत भारत के तहत हमारे स्टेशन न

सिर्फ आधुनिक रूप ले रहे हैं दोहरीकारण और विद्युतीकरण का कार्य तेजी से जारी है। 2025 तक हमारा संसदीय क्षेत्र रेलवे में बड़ी उंच्चाइयों को छूएगा आज हमारा संसदीय क्षेत्र देश में पहला मॉडल है। जहां तीनों जिलों में मेडिकल कॉलेज है यह पूरे देश के अंदर एकमात्र मंदसौर संसदीय क्षेत्र ही है। यह मैं आज आप सबके जानते हुए भी इसलिए इस बात का जिक्र कर रहा हूं कि हमें और हमारे देश की शक्ति को पूरे ताकत के साथ आगे बढ़ाना है और उसके लिए हमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक मजबूत नेता के रूप में विश्व के सामने प्रस्तुत करना है। मोदी जी की लड़ाई सनातन और समृद्धि के लिए है जिसमें हर देशवासी सम्मिलित होगा। कृषि के क्षेत्र में हमारा संसदीय क्षेत्र लगातार उन्नति कर रहा है और दिल्ली मुम्बई एक्सप्रेस वे मार्ग से हमारी उपज को एक नया और बड़ा बाजार मिलेगा। जहां किसान अपनी उपज का उचित दाम प्राप्त कर सकेंगे। उन्हें सभी संगठनों और समाजसेवियों से आग्रह किया है कि आने लोकसभा चुनाव में अपने-अपने साथियों और अपने परिवार के साथ मोदी जी को विश्व की एक बड़ी ताकत के रूप में स्थापित करने के लिए जूट जाएं। सांसद गुपता ने विश्वास दिखाते हुए बताया कि लोकसभा क्षेत्र के समस्त भाइयों बहनों और बुजुर्गों से कि यह इस बार एक नया आयाम छूएंगे।

एमपीपीएससी राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा 23 जून को होगी

इंदौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2024 अब 23 जून को होगी। लोकसभा चुनाव की वजह से परीक्षा की तारीख को आगे बढ़ाया गया है। इसके पहले परीक्षा 28 अप्रैल 2024 को आयोजित की जानी थी।

मध्य प्रदेश लोकसेवा आयोग ने एक विज्ञप्ति जारी कर परीक्षा की तारीख बदलने की सूचना दी है। जिसमें बताया है कि लोकसभा निर्वाचन कार्यक्रम-2024 को दृष्टिगत रखते हुए राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2024 अब 28 अप्रैल के स्थान पर 23 जून को आयोजित की जाएगी। परीक्षा के लिए प्रवेश पत्र दिनांक 12 जून से आयोग की वेबसाइट www.mppsc.mp.gov.in VWm www. mponline.gov.in पर डाउनलोड करने के लिए उपलब्ध रहेंगे। लोकसभा चुनाव की वजह से परीक्षा की तारीख बदलने की संभावना जताई जा रही थी। मध्य प्रदेश लोकसेवा आयोग ने इस पर तुरंत निर्णय लिया और तारीख को 28 अप्रैल से 23 जून कर दिया।

शबरी ने भगवान राम को खिलाएं जूठे बैर, भगवान राम की हनुमान से हुई भेंट

मनासा, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। अपनी पत्नि की खोज में भगवान राम भटकते-भटकते मतंग मुनी के आश्रम पहुंचे, जहां माता शबरी कई वर्षों से उनका इंतजार कर रही थी। भगवान ने माता शबरी से भेंट कर उनकी कुटिया में पहुंचने ओर उनके जूठे बैर खाएं। यह सब देख पास खड़े लक्ष्मण असहज दिखाई दिए तो भगवान ने उन्हे भी बैर खाने का आग्रह किया। यहा गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं कि भगवान ने शबरी की उनके प्रति अनंत प्रेम व भक्ति के वशीभुत होकर सुक्ष्म जाती की माता शबरी के जूठे बैर खाएं। यह दृश्य था गांव नलखेडा में चल रही रामलीला के आठवें

दिन बाली वध प्रसंग का। जहां रामलीला के मंच से कलाकारों ने भगवान का शबरी के जूठे बैर खाना, बाली वध, सुग्रीव का किष्किंधा का राजा बनना, माता सीता की खोज में चारों तरफ वानर सेना भेजना व हनुमान जी का लंका की ओर प्रस्थान करने का सजीव चरित्र चित्रण किया गया।

प्रसंग के दोरान शबरी को भगवान ने नवधा भक्ति सुनाते हुए उनका उध्दार किया। आगे भगवान की हनुमान जी से भेंट हुई। हनुमान जी ने ऋषि मुख पर्वत पर निवास कर रहे वानरों के राजा सुग्रीव से भगवान की मित्रता करवाई। भगवान ने अपने मित्र को सारा सुख वैभव देने बाली सुग्रीव युद्ध करवाया। दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें भगवान ने बाली का उद्धार करते हुए अपने श्री चरणों में स्थान दिया। बाली वध के बाद वानरों के राजा सुग्रीव ने माता सीता की खोज में चारों तरफ वानर सेना का भेजा। जहां वानरों का एक दल भटकते भटकते समुन्द्र किनारे पहुंचा, जहां उनको संपाती नाम के पक्षी ने रावण द्वारा माता सीता का हरण कर लंका ले जाने का समाचार दिया। शबरी की भूमिका सखुर डांसर, राम राहुल पाटीदार, लक्ष्मण भरत कारपेंटर, हनुमान अर्जुन शर्मा, बाली कैलाश राठोर, तारा परशराम धनगर, सुग्रीव पंकज मोड, अंगद ललीत पाटीदार, सम्पाती राहुल धनगर, जामवंत की कमलेश राठोर ने निभाई। इस दोरान अतिथि शासकिय हाई स्कूल नलखेड़ा के शिक्षक नवीन शर्मा, नरेन्द्र सिंह तंवर व स्टाफ, शामावि नलखेडा के प्रधानाध्यापक देवकिशन रावत, शामावि कुण्डला शिक्षक मांगीलाल लोहार, शामावि देवरी खवासा शिक्षक सत्यनारायण सोनी, शिक्षक ईश्वर लाल प्रजापत व शामावि कडी आंत्री के शिक्षक लोकेश कारपेंटर ने उपस्थित जनता को संबोधित किया। इस दोरान गांव सहित आसपास के गांवों के सैकड़ों महिला पुरुष रामलीला देखने उपस्थित थे।

डा.बटवाल, जोशी, श्रीमती तोमर और डा. राठौर मानव अधिकार आयोग मित्र बनाए गए

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। म.प्र. मानव अधिकार आयोग द्वारा नगर के वरिष्ठपत्रकार एवं समाजसेवी द्वय डॉ. घनश्याम बटवाल, ब्रजेश जोशी, पर्यावरण एवं शिक्षाविद श्रीमती उर्मिला तोमर और पूर्व सीएमएचओ डॉ.के एल राठौर को मंदसौर जिले के भौगोलिक क्षेत्र के लिए आगामी 2 वर्षों के लिए आयोग मित्र मनोनित किया गया है।

मध्य प्रदेश मानव अधिकार आयोग के शोध अधिकारी संजय कुमार विश्वकर्मा द्वारा भोपाल से 19 मार्च को जारी पत्र में यह जानकारी दी गई है। उन्होंने बताया है कि माननीय आयोग द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार श्री बटवाल जोशी श्रीमती तोमर डॉ राठौर को आयोग मित्र के रूप में नामांकित किया गया है। और और मानव अधिकारों के संवर्धन और संरक्षण के लिए अपनी दक्षता व योग्यता के आधार पर निस्वार्थ मानसेवी सेवाएं देते हुए अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने की अपेक्षा व्यक्त की है। आयोग द्वारा जिला कलेक्टर और जिला पुलिस अधीक्षक को भी नियुक्ति पत्र की प्रतिलिपि भेज कर इस जानकारी से अवगत कराया गया है।

कार की टक्कर से बाइक सवार तीन घायल

पिपलियामंडी, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। कार की टक्कर से बाइक सवार तीन घायल हो गए। जिन्हें मल्हारगढ सरकारी अस्पताल में उपचार के बाद मंदसौर रेफर कर दिया। मोल्याखेडी निवासी मिठ्ठूलाल पिता मांगीलाल बावरी ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि बाइक (एमपी 14 जेडडी 2341) पर सवार होकर मल्हारगढ जा रहे मेरे बड़े जमाई जयराम व पीछे बेठी दिव्या, मीनाक्षी को मोल्याखेडी फन्टे पर क्रासिंग के दौरान कार (एमपी 09 सीजे 0421) के ड्राइवर ने तेज व लापरवाहीपूर्वक चलाकर टक्कर मार दी। पुलिस ने कार ड्राइवर के खिलाफ केस दर्ज किया।

स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयोजित एक दिवसीय आरोग्य शिविर सम्पन्न

मनासा, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई शासकीय आर.वी. कॉलेज मनासा द्वारा गोद ग्राम शेषपुर में संस्था स्तरीय विशेष शिविर पंचम दिवस कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक दिवसीय स्वास्थ्य जांच आरोग्य शिविर आयोजित हुआ। आरोग्य शिविर में मुख्य अतिथि सामुदायिक चिकित्सालय मनासा से डॉ. मदन पाटीदार, डॉ. प्रकाश धाकड, डॉ. प्राची राठौर रहे। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती एवं युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद जी की तस्वीर पर रोली तिलक लगाकर की गई तत्पश्चात अतिथियों द्वारा शिविरार्थीओ को संबोधित करते हुए डॉ मदन पाटीदार नें कहा वर्तमान भाग दौड दिनचर्या जीवन में हमें अपने स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। डॉ. प्रकाश धाकड ने कटे होंठ, दंत चिकित्सा संबंधी आवश्यक निर्देश दिए। डॉ. प्राची राठौर ने स्वास्थ्य विभाग की विभिन्न योजनाओं एवं किशोरी स्वास्थ्य कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी एवं ग्रामीण महिलाओं एवं शिविरार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया। इस अवसर पर डॉ. मदन पाटीदार, डॉ. प्रकाश धाकड, डॉ. प्राची राठौर रासेयो जिला संगठक प्रो. अरुण कुमार चौरसिया, कार्यक्रम अधिकारी प्रो. आशा पटेल सहित बडी संख्या में शिविरार्थी ग्रामीण जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मंच संचालन स्वयंसेवक पायल शर्मा ने किया एवं आभार प्रदर्शन रासेयो जिला संगठक प्रो. अरुण कुमार चौरसिया ने किया।

खाटू श्याम बाबा फाग महोत्सव शाही श्रृंगार दर्शन को उमड़े श्रद्धालु

नीमच, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। रंग रंगीला फाग महोत्सव के पांच दिवसीय महोत्सव की पावन श्रृंखला में बुधवार को हारे के सहारे बाबा खाटू श्याम का आज शाही श्रृंगार हुआ।

प्राचीन श्री श्याम मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित गोपाल कृष्ण शर्मा ने बताया कि बुधवार 20 मार्च को प्राचीन खाटू श्याम बाबा मंदिर को कोलकाता एवं दिल्ली से मंगाए गए विशेष फूलों से श्रृंगारित किया गया। 20 मार्च एकादशी को सांय काल 7 बजे सुखे मेवों काजू ,बादाम, दाख पिस्ता से अलौकिक शाही श्रृंगार और आरती आयोजित की गई।शाही दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का जनसेलाब उमडा, इसके साथ ही21 मार्च द्वादशी को प्रात: 8 बजे मंदिर परिसर से तो श्याम बाबा की पावन ज्योत आयोजित होगी। कार्यक्रम को लेकर प्राचीन खाटू श्याम मंदिर के बाहर आकर्षण साथ सजा की गई इसी श्रृंखला में भव्य तीन मंजिला प्रवेश द्वार सजाया गया जिसमें श्री कृष्ण अर्जुन को महाभारत युद्ध के समय जैसे हम कर्म करते हैं वैसे ही फल मिलते हैं... भागवत गीता उपदेश देते , राधा कृष्ण और भक्ति करते कृष्ण और शीश के दानी बाबा खाटू श्याम का चित्र भव्य फूलों आकर्षक रंग बिरंगी दुधिया रोशनी से सजाया गया।

गोपाल को थाना हाजरी का आदेश

नीमच, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। जिला मजिस्ट्रे4ट नीमच श्री दिनेश जैन व्दा रा राज्यध सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा-5 (क-ख) के तहत अनावेदक गोपाल पिता लालुराम चौहान निवासी भाटखेडी नाका मनासा जिला नीमच को सदाचार बनाये रखने के लिए 03 माह तक सप्तापह में एक दिन (थाना प्रभारी मनासा व्दाचरा निश्चित दिन) थाना हाजरी का आदेश जारी किया गया है।

जबलपुर में 25000 के सिक्के लेकर कलेक्टर कार्यालय पहुंचा निर्दलीय प्रत्याशी नामांकन फार्म लेने

जबलपुर, 20 मार्च। नामांकन पत्र लेने पहुंचे लोकसभा निर्दलीय प्रत्याशी विनय चक्रवर्ती 25000 के सिक्के लेकर कलेक्टर पहुंचा। कलेक्ट्रेट तैनात किए गए रिटर्निंग आफिसर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी देखकर थोड़ा असहज हो गए। फिर सहज भाव में कर्मियो से सिक्कों को गिनने के लिए कहा। फिर क्या था कर्मी सिक्के गिनने में जुट गए। इसके बाद नामांकन फार्म लिया।

ऑनलाइन डिजिटल सुविधा न होने के कारण परेशानी–नामांकन पत्र लेने के बाद विनय चक्रवर्ती बोले-ऑनलाइन डिजिटल सुविधा न होने के कारण मुझे परेशानी का सामना करना पड़ा। मैंने कुछ भारतीय मुद्रा बचा के रखी थी। सारे सिक्के को लेकर यहां आ या। डिजिटल युग में आनलाइन व्यवस्था करनी चाहिए। नामांकन फार्म लेकर जा रहा हूं, जिसको मैं एक-दो दिनों के अंदर समिट करने वाला हूं। आज मैं जब सुबह यहां पर फॉर्म लेने आया तो यहां पर ऑनलाइन डिजिटल सुविधा न होने के कारण मुझे परेशानी का सामना करना पड़ा। मैंने कुछ भारतीय मुद्रा बचा के रखी थी। सारे सिक्के को लेकर यहां आ या।

मेहंदी प्रतियोगिता के माध्यम से किया जा रहा मतदाताओं को जागरूक

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अंतर्गत स्वीप गतिविधियों के तहत जिले में मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसके लिये महिला एवं बाल विकास विभाग के तत्वाधान में मतदाता जागरूकता के कार्यक्रम लगातार आयोजित किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत गांव- गांव में मतदाताओं को जागरूक करने के लिए मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है तथा महिलाएं हाथों में मेहंदी लगाकर मतदाताओं को जागरूक कर रही हैं। संदेश के रूप में हम सब वोट करेंगे, वोट देंगे। इस प्रकार के संदेश भी लिख रही है। यह कार्य महिला बाल विकास विभाग के माध्यम से आंगनवाडी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं के द्वारा किया जा रहा है। इस कार्य में मतदाताओं के द्वारा भी विशेष रूचि ली जा रही है। साथ ही सभी लोग आपस में जागृत हो रही रहे हैं, और अन्य लोगों को भी जागरूक कर रहे हैं।

मतदाताओं को जागरूक करने के लिए दिलाई जा रही शपथ–जिले में मतदाताओं को जागरूक करने के लिए शपथ दिलाई जा रही हैं। ''हम, भारत के नागरिक, लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतान्त्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे । तरह तरह की गतिविधियों के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। यह गतिविधि हाट बाजार, मेलो, चौराहों पर की जा रही है। साथ मतदान केंद्रों पर जाकर ईवीएम को चलाना, मतदान का महत्व, लोकतंत्र का महत्व आदि के बारे में मतदाताओं को बताया जा रहा है। जिससे मतदाताओं में जागरूकता उत्पन्न हो।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में स्क्रीनिंग कमेटी गठित

भारत निर्वाचन आयोग को भेजे जाने वाले प्रस्तावों का कमेटी करेगी परीक्षण

मंदसौर, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। राज्य शासन द्वारा मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के माध्यम से भारत निर्वाचन आयोग को प्रेषित किए जाने वाले विभागों के प्रस्ताव का परीक्षण/अनुशंसा करने के लिए स्क्रीनिंग कमेटी का गठन मुख्य सचिव की अध्यक्षता में किया है। समिति में प्रमुख सचिव, सामान्य प्रशासन तथा प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले विभागों से संबंधित अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव/सचिव सदस्य होंगे।

लोकसभा निर्वाचन-2024 के संदर्भ में जारी आचार संहिता के दौरान अब कोई भी विभाग अपना प्रस्ताव स्क्रीनिंग कमेटी के परीक्षण / अनुशंसा के पहले मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अथवा सीधे भारत निर्वाचन आयोग को प्रेषित नहीं करेगा। स्क्रीनिंग कमेटी के समक्ष प्रस्ताव प्रस्तुत करने के पूर्व प्रशासकीय विभाग भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों/स्पष्टीकरण का पर्याप्त अध्ययन और उसके अनुसार परीक्षण करते हुए भारत निर्वाचन आयोग के सु-संगत निर्देशों/आदेशों का हवाला देते हुए उसे संदर्भित करेगा। प्रशासकीय विभाग को अपने प्रस्ताव में यह औचित्य भी दर्शाना होगा कि प्रस्ताव क्यों अत्यन्त महत्वपूर्ण है और निर्वाचन प्रक्रिया पूर्ण होने तक इसे क्यों नहीं रोका जा सकता है। भारत निर्वाचन आयोग को प्रेषित किया जाने वाला प्रस्ताव स्वयं स्पष्टटीप (Self Conteined) के रूप में भेजा जाएगा। प्रस्ताव भेजने के पूर्व भारत निर्वाचन आयोग के निर्णय में लगने वाले संभावित समय का विशेष ध्यान रखा जाए।

उधार नही दिया तो दुकानदार को पीटा

पिपलियामंडी, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। सामान उधार नही देने पर दुकानदार को पीटा, पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। फोसरी (संजीत) निवासी धुरव पिता राकेश मालपानी ने नाहरगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि पारली निवासी संदीप पिता प्रकाश माली मेरी किराना दुकान पर सामान लेने आया था, सामान देने से मना कर दिया तो गाली-गलौज कर लात-घुसों से पीटा, पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया।

ताशपत्ती खेलने से मना किया तो पीटा

पिपलियामंडी, 20 मार्च गुरु एक्सप्रेस। ताशपत्ती खेलने से मना किया तो पीटा, पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। गुडभेली बडी निवासी गोपल गिर ने पिपलिया चोकी पर शिकायत दर्ज कराई कि मुन्देडी मार्ग महादेव मंदिर पर तीन व्यक्ति ताशपत्ती खेल रहे थे, मैंने मना किया तो पंकज गिर ने गाली-गलौज की, मारपीट की। बीच-बचाव करने आए मेरे बेटे सुनील के भी सिर में चोंट आई। पुलिस ने आरोपी पंकज के खिलाफ केस दर्ज किया।

✲ उठावना ✲

मेरे सुपुत्र, स्व. भंवरलालजी भदादा के पौत्र, स्व. जगदीशजी, हरिवल्लभ, रामगोपाल, अरुण, प्रकाशचंद्र, अशोक कुमार, स्व. यशवंतकुमारजी, राजाराम के भतीजे, विदोष के छोटे भाई नितेश, पियूष के बड़े भाई, लक्ष्य के पिताजी, माधव के चाचा सोमिल, अनिक के बड़े पापा विवेक भदादा का आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 19 मार्च 2024 मंगलवार को हो गया है जिनका उठावना दिनांक 21 मार्च 2024 गुरुवार को दोप. 2 बजे माहेश्वरी भवन नयापुरा रोड मंदसौर पर रखा गया है।

✲✲✲ शोक बैठक ✲✲✲
प्रतिदिन निज निवास पर शाम 7 से 9 बजे रखी गई है।
✲✲✲ शोकाकुल ✲✲✲
महेश कुमार भदादा
ए-134 जनता कॉलोनी मंदसौर

पुराने
पंखे, कुलर व अलमारी पर
मन पसंद कलर करवाईयें
अजन्ता पेन्टर्स
अम्बेडकर चौराहा मंदसौर
7089832581

इंदौर के मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर
त्वचा रोग विशेष एवं डर्मेटोलेजर सर्जन
डॉ. परीक्षित शर्मा
एम.डी. (स्कीन)
शनिवार दिनांक 23 मार्च को शाम 5 से रात 8 और रविवार 24 मार्च को सुबह 9 से दोपहर 2 बजे तक उपलब्ध रहेंगे।
सुविधाएं-✲ चेहरे के कील-मुहासे, चोट व चेहरे के निशान, ऑखों के नीचे कालापन, चेहरे व हाथों का कालापन, ✲ एक्जीमा, सोरियासिस, सफेद दाग का इलाज व सर्जरी, ✲ शरीर पर तिल व मस्सों (Warts) को मशीन द्वारा हटाना, ✲ गर्भावस्था में होने वाले स्ट्रेचमार्क्स की चिकित्सा, ✲ असमय झड़ते बालों का आधुनिक पद्धति से ईलाज, ✲ शरी पर टेटू (गोदना) को मशीन द्वारा हटाना, ✲ लेजर मशीन द्वारा अनचाहे बालों से छुटकारा, ✲ बच्चों व बुजुर्गो की त्वचा संबंधित समस्याएं, ✲ नाखुन में होने वाले रोगों का उपचार, ✲ सौन्दर्य परामर्श (Cosmetic Consultation)
करजूवाला कम्पाउण्ड, पमनानी हॉस्पिटल के पीछे, स्टेशन रोड़, मंदसौर सम्पर्क-9424813088

✲✲✲ जाहिर सूचना ✲✲✲

सर्व साधारण को इस जाहिर सूचना के माध्यम से सूचित किया जाता है कि किटियानी मंदसौर स्थित भवन क्रमांक M.I.362 जो की श्री जाकीर हुसैन पिता श्री एहमद भाई के नाम दिनांक 28.02.2005 को भवन का विक्रय विलेख निष्पादित हो चुका था इसके पश्चात् इनके द्वारा नियुक्त मु.आ श्री अशोक पिता पुनमचन्द पाटीदार मंदसौर ने उक्त भवन मुझ प्रार्थीया को विक्रय दिनांक 7 नवम्बर 2011 को मेरे पक्ष में पंजीयक कार्यालय में पंजीयन भी निष्पादित करवा दिया था अब उक्त भवन का नामांतरण मूल आवंटी के स्थान पर मेरे नाम से म.प्र. गृह निर्माण मण्डल में नामांतरण किया जाना है।

अत: इस संबंध मूल आवंटी /परिजन अथवा किसी व्यक्ति/संस्था को आपत्ति हो तो वह विज्ञप्ति प्रकाशन दिनांक से 7 दिवस में ठोस प्रमाण के साथ म.प्र.गृह निर्माण मण्डल मंदसौर प्रस्तुत करे। उक्त समयावधि व्यतीत हो जाने पर उक्त भवन मेरे नाम से नामांतरण हेतु म.प्र. गृह निर्माण मण्डल में आवेदन प्रस्तुत कर नामांतरण करवा लिया जोवगा। इसके उपरांत कोई उर्ज या दावा, आपत्ति मान्य नहीं होगी।

प्रार्थीया
परवीन बी
पति नौशाद खॉ निवासी चौधरी कालोनी मंदसौर

कार्यालय नगर परिषद सीतामऊ जिला-मंदसौर (म.प्र.)

Phone & fax no.-07426-222031, Email-cmositamahu@mpurban.gov.in

क्रमांक-311/निर्माण/2024 सीतामऊ दिनांक-07.03.2024

✲✲✲ ई-निविदा आमंत्रण सूचना ✲✲✲

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीयकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाईट https://mptenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

क्रं.	ऑनलाईन टेण्डर नंबर	कार्य का नाम	कार्य की लागत जीएसटी छोड़कर	अमानत राशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य	समयावधि (वर्षाकाल सहित)
01	2024_UAD_342756_1	वार्ड क्रं. 01 से 03 तक में ट्यूबवेल खनन कार्य	8,96,987/-	9,000/-	2000/-	3 माह
02	2024_UAD_342758_1	वार्ड क्रं. 04 से 06 तक में ट्यूबवेल खनन कार्य	8,96,987/-	9,000/-	2000/-	3 माह

निविदा प्रपत्र क्रय करने की अंतिम तिथि 26.03.2024 सायंकाल 05.30 बजे तक एवं निविदा दर ऑनलाईन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 26.03.2024 सायंकाल 05.30 बजे तक

शर्ते - 1. विस्तृत निविदा विज्ञप्ति टेण्डर एवं अन्य दस्तावेज देखने एवं डाउनलोड करने के लिए राज्य शासन की नवीन वेबसाईट https://mptenders.gov.in पर सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए नगर परिषद सीतामऊ में कार्यालयीन दिवस एवं समय पर संपर्क किया जा सकता है। निविदा में यदि कोई संशोधन होता है तो वह ऑनलाईन पोर्टल पर ही प्रदर्शित होगा, उसके लिए पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

मुख्य नगरपालिका अधिकारी
नगर परिषद सीतामऊ

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक- आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in